सदस्य बनें

सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 500 मात्र

पूरा वर्ष अखबार निःशुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती ● प्रभावी ● विश्वसनीय
संपर्क : 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367 :: Guwahati, Friday, 13 March 2026 :: Vol-9, Year-1 :: शुक्रवार । 13 मार्च 2026 । शक संवत 1947 । चैत्र । कृष्ण ।दशमी । :: मूल्य : 10 रुपये पृष्ठ-12

जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

आस्था पर आपत्ति!

भारतीय क्रिकेट टीम की टी-20 विश्व कप जीत देश के लिए गर्व और उल्लास का क्षण थी। करोड़ों भारतीयों ने इस जीत को अपनी जीत माना। लेकिन जैसे ही ट्रॉफी को मंदिर ले जाने की खबर सामने आई, कुछ हलकों में विवाद खड़ा कर दिया गया। सवाल यह है कि क्या सचमुच इसमें विवाद का कोई औचित्य था?

भारत में सफलता के बाद ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त करना एक सामान्य सांस्कृतिक परंपरा है। खिलाड़ी हों, वैज्ञानिक हों या आम नागरिक- अक्सर लोग अपनी उपलब्धि को भगवान की कृपा मानकर मंदिर, गुरुद्वारे या दरगाह पर मत्था टेकते हैं। ऐसे में यदि किसी खिलाड़ी ने ट्रॉफी के साथ मंदिर जाकर धन्यवाद दिया, तो इसे स्वाभाविक आस्था के रूप में ही देखा जाना चाहिए।फिर भी पूर्व क्रिकेटर और राजनेता कीर्ति **शेष पृष्ठ 5 पर**

विश्व विजेता भारत

जन जन विचार
...✍ खेल डेस्क

अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए टी20 विश्व कप 2026 के फाइनल में भारतीय टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए न्यूजीलैंड को 96 रन से हराकर इतिहास रच दिया। सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में भारत ने लगातार दूसरी बार खिताब जीतकर न केवल बैक-टू-बैक चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया, बल्कि तीन बार टी20 विश्व कप जीतने वाली और अपने ही घर में ट्रॉफी उठाने वाली पहली टीम भी बन गई।

इस ऐतिहासिक जीत के पीछे खिलाड़ियों के **शेष पृष्ठ 3 पर**

बंद हो सकते हैं गुवाहाटी के रेस्टोरेंट

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष का असर अब देश के कई हिस्सों के साथ असम की राजधानी गुवाहाटी में भी दिखने लगा है। केंद्र सरकार द्वारा घरेलू उपभोक्ताओं को प्राथमिकता देने के निर्देश के बाद वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडरों की आपूर्ति रोक दी गई है, जिससे शहर के रेस्टोरेंट और खानपान व्यवसाय गंभीर संकट का सामना कर रहे हैं।

तेल कंपनियों को जारी निर्देश के अनुसार फिलहाल एलपीजी की आपूर्ति केवल घरेलू उपभोक्ताओं के लिए सुनिश्चित की जा रही है। इसके चलते वाणिज्यिक सिलेंडरों की बॉटलिंग और वितरण अस्थायी रूप से रोक दिया गया है। इंडेन की बुकिंग प्रणाली पर भी अचानक कॉल वॉल्यूम 10 से 12 गुना बढ़ जाने के कारण कुछ समय के लिए सेवाएं बाधित हो गईं, हालांकि बाद में सिस्टम बहाल कर दिया गया।

गुवाहाटी के कई रेस्टोरेंट संचालकों का कहना है कि उनके पास एलपीजी का स्टॉक तेजी से खत्म हो रहा है और यदि अगले चार-पांच दिनों में आपूर्ति बहाल नहीं हुई तो कई रेस्टोरेंटों को अस्थायी रूप से बंद करना पड़ सकता है। रेस्टोरेंट एसोसिएशन के प्रतिनिधियों के अनुसार बिना पूर्व सूचना के की गई इस राशनिंग से व्यवसाय प्रभावित हुआ है। कई रेस्टोरेंट फिलहाल डाइन-इन सेवा कम कर ऑनलाइन ऑर्डर तक सीमित होने लगे हैं।

इस संकट का असर केवल कारोबार तक सीमित नहीं रह सकता। यदि स्थिति लंबी चली तो बैंक ऋण अदायगी में चूक, कर्मचारियों की नौकरी **शेष पृष्ठ 2 पर**

चुनाव पूर्व असम को 'मोदी सौगात'

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 13-14 मार्च को दो दिवसीय असम दौरे पर आ रहे हैं। इस दौरान वे राज्य को 32,000 करोड़ रुपए से अधिक की विकास परियोजनाओं की सौगात देंगे। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के अनुसार प्रधानमंत्री का दौरा कोकराझाड़, गुवाहाटी और सिलचर तक फैला होगा, जहां बुनियादी ढांचा, ऊर्जा और जनकल्याण से जुड़ी कई अहम योजनाओं की शुरुआत की जाएगी। दौरे की शुरुआत कोकराझार से होगी, जहां प्रधानमंत्री विभिन्न क्षेत्रीय परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। इसके बाद वे गुवाहाटी में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेंगे और किसानों के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की नई किस्त जारी करेंगे। गुवाहाटी कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू चाय बागान समुदाय के लिए भूमि अधिकार कार्यक्रम की शुरुआत होगी। लगभग दो सौ वर्षों से असम में रह रहे अनेक चाय बागान परिवारों को अब तक भूमि का कानूनी स्वामित्व नहीं मिला है। प्रधानमंत्री अपने हाथों **शेष पृष्ठ 5 पर**

यूपीएससी में असम के युवाओं की चमक

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

देश की प्रतिष्ठित संघ लोक सेवा आयोग) की सिविल सेवा परीक्षा 2025 के अंतिम परिणाम में असम के कई युवाओं ने सफलता हासिल कर राज्य का नाम रोशन किया है। भले ही इस वर्ष टॉप-10 में असम का कोई अभ्यर्थी शामिल नहीं रहा, लेकिन चयनित उम्मीदवारों की सूची में राज्य के कई प्रतिभाशाली युवाओं ने जगह बनाई है।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार अभिज्ञान हजारिका, रिकी लहकर प्रधान, ईश्वरी डेका, ऋतुराज शर्मा, भास्वता सैकिया और कल्लुल हजारिका जैसे अभ्यर्थियों ने परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। इन युवाओं ने कठिन प्रतिस्पर्धा के बीच अपनी प्रतिभा और मेहनत के दम पर यह उपलब्धि हासिल की।

इनमें से कुछ अभ्यर्थी पहले राज्य स्तर की सेवाओं में भी चयनित हो चुके थे। उदाहरण के तौर पर अभिज्ञान हजारिका पहले असम वित्त सेवा की परीक्षा पास कर चुके थे। बाद में उन्होंने सिविल सेवा परीक्षा में भी सफलता प्राप्त की।

सिविल सेवा परीक्षा को देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक माना जाता है। हर वर्ष लाखों अभ्यर्थी इसमें शामिल होते हैं, लेकिन सीमित संख्या में ही उम्मीदवार अंतिम सूची में स्थान बना पाते हैं। ऐसे में असम के युवाओं की यह सफलता राज्य के लिए गर्व का विषय मानी जा रही है।

अंदर पढ़ें

3. ☞अब 'महाहोली' की तैयारी
4. ☞खामेनेई की मौत और भारत
5. ☞बिहार में बनेगी नई सरकार
7. ☞अज्ञेय : प्रयोगवाद से नई कविता...
8. ☞टाइगर प्रिंसेस डॉ. लतिका नाथ
9. ☞ईरान-इजरायल युद्ध से असम...
10. ☞जेईई के बिना भी आईआईटी में ....
11. ☞एलन का रिकॉर्ड शतक,...

मजबूत नेता ही निभा सकता है वादा : चरण बोड़ो

जन जन विचार
...✍ माजबाट

मजबाट में बीपीएफ की '5 गारंटी' के चेक वितरित

माजबाट के राजीव गांधी स्टेडियम में बीपीएफ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पाचनै-चेरफांग क्षेत्र के लाभार्थियों के बीच चुनाव के समय घोषित '5 गारंटी' के तहत आर्थिक सहायता के चेक वितरित किए गए। कार्यक्रम में असम के परिवहन मंत्री और बीपीएफ नेता चरण बोड़ो ने कहा कि नेता मजबूत होगा तभी जनता

से किया गया हर वादा पूरा किया जा सकता है।

मंत्री चरण बोड़ो ने बताया कि बीटीसी चुनाव के दौरान बीपीएफ द्वारा किए गए वादों के अनुसार क्षेत्र के विभिन्न वर्गों के लोगों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। इसके तहत 900 स्वयं सहायता समूहों को 15-15 हजार रुपए, आईटीआई और पॉलिटेक्निक डिप्लोमा धारक 100 बेरोजगार युवाओं को रोजगार के लिए 2 लाख रुपए की एकमुश्त सहायता, 100 वरिष्ठ नागरिकों और 100 दिव्यांग व्यक्तियों को 10-10 हजार रुपए की आर्थिक सहायता दी गई। इसके अलावा असम दर्शन योजना के अंतर्गत क्षेत्र के धार्मिक संस्थानों को 1.5 लाख रुपए की सहायता भी प्रदान की गई।

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति राज्य के स्कूली बच्चों को नि:शुक उपलब्ध करा रही हिंदी पाठ्य-पुस्तकें

नए शैक्षिक सत्र के लिए 22 लाख से अधिक पाठ्यपुस्तकों का वितरण शुरू

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा राज्य के स्कूली विद्यार्थियों के लिए नि:शुल्क हिंदी पाठ्यपुस्तकों के वितरण का कार्य शुरू कर दिया गया है। असम सरकार के विद्यालय शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार 'क' वर्ग से लेकर कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष 22,34,100 हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। इन पुस्तकों को राज्य के 149 शैक्षिक ब्लॉकों में चरणबद्ध तरीके से भेजा जाएगा।

कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार के क्षेत्रीय निदेशक अनिल बी. जी. ने किया। इस अवसर पर उन्होंने असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि समिति हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि हर वर्ष समय से पहले पाठ्यपुस्तकों का वितरण सुनिश्चित करना विद्यार्थियों के हित में एक सराहनीय पहल है।

समिति के मंत्री डॉ. क्षीरदा कुमार सैकिया ने बताया कि असम सरकार के निर्देशानुसार समिति वर्ष 1972 से लगातार हिंदी पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन और वितरण का कार्य कर रही है। इस वर्ष 31 मार्च तक सभी शैक्षिक ब्लॉकों में पुस्तकों की आपूर्ति सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है, ताकि नया शैक्षणिक सत्र शुरू होने से पहले विद्यार्थियों को किताबें मिल सकें।

पहले चरण में बजाली, बक्सा, मोरीगांव और नगांव जिलों के 21 ब्लॉकों में कुल 2,67,847 पाठ्यपुस्तकों को भेजने के लिए वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

कार्यक्रम में समिति के कोषाध्यक्ष प्रफुल्ल चंद्र बोरा, साहित्य परिषद के सदस्य डॉ. अमूल्य चंद्र बर्मन, असम राज्य पाठ्यपुस्तक निगम के प्रबंधक मुनि कृष्ण शर्मा सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

आस्था पर आपत्ति!

आजाद को यह रास नहीं आया। उनका तर्क है कि राष्ट्रीय ट्रॉफी को किसी धार्मिक स्थल से जोड़ना उचित नहीं है। यह तर्क सिद्धांत की दृष्टि से भले सही लगे, लेकिन सवाल यह भी है कि क्या खिलाड़ियों की व्यक्तिगत आस्था पर सार्वजनिक आपत्ति दर्ज करना जरूरी था?

असल में यह विवाद उस मानसिकता को भी उजागर करता है जिसमें हर घटना को बहस और राजनीति का विषय बना दिया जाता है। जब देश जश्न मना रहा हो, तब अनावश्यक विवाद खड़ा करना कहीं न कहीं उस उपलब्धि की चमक को धूमिल करता है।

खेल का उद्देश्य देश को जोड़ना है, तो जीत का जश्न भी उसी भावना से होना चाहिए। खिलाड़ियों की आस्था पर प्रश्नचिह्न लगाने से बेहतर होता कि इस ऐतिहासिक जीत का सम्मान किया जाता। आखिर यह ट्रॉफी केवल एक टीम की नहीं, पूरे देश की मेहनत और सपनों का प्रतीक है।

साप्ताहिक राशिफल

13 से 19 मार्च 2026 ।। विक्रम संवत 2082-**मास :** चैत्र, **पक्ष :** कृष्ण, **तिथि :** दशमी

मेष — **यह** सप्ताह आपके लिए बेहतर रहने वाला है। पारिवारिक रिश्तों में मजबूती बनी रहेगी, लेकिन व्यापारिक दृष्टि से कुछ परेशानियाँ संभव हैं।

वृषभ — **आर्थिक** एवं व्यापारिक कार्यों में सफलता के अवसर खुलेंगे। पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। नौकरी में तरक्की के योग हैं।

मिथुन — **कार्य** क्षेत्र या नौकरी में परिवर्तन के योग बन रहे हैं। आर्थिक उन्नति एवं व्यापार में सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य ठीक बना रहेगा।

कर्क — **आत्मविश्वास** की वृद्धि से कार्यों में नई सफलता के योग हैं। संतान पक्ष से सुख का अवसर मिलेगा। खान-पान में रुचि बढ़ेगी।

सिंह — **यह** सप्ताह थोड़ा संघर्षशील हो सकता है। आर्थिक लेन-देन में सावधानी बरतें। विवादों से अपने आपको दूर रखें।

कन्या — **सप्ताह** के प्रारंभ में थोड़ा तनाव का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन कठिन परिस्थितियों में भी कार्य करते रहने से लाभ मिलेगा।

तुला — **मित्रों** के सहयोग से रुके हुए कार्य पूरे होंगे। पारिवारिक वातावरण सुखमय बना रहेगा। कार्यों में सफलता मिलने के योग हैं।

वृश्चिक — **इस** सप्ताह आप अपने कार्यों के प्रति सजग और उत्साह से भरे रहेंगे। सभी क्षेत्रों से लाभ के योग बन रहे हैं।

धनु — **आर्थिक** एवं व्यापारिक क्षेत्रों में सावधानी बरतें। गुरुजनों से मार्गदर्शन लें। परिवार में बच्चों एवं आपके कार्यक्षेत्र में सफलता रहेगी।

मकर — **अपने** कार्य क्षेत्र में आपको अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। धैर्य और संयम से कार्य करने पर लाभ मिलेगा।

कुंभ — **व्यापारिक** क्षेत्र में कुछ नया अनुभव प्राप्त हो सकता है, जो आने वाले समय में लाभदायक रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा।

मीन — **यह** सप्ताह आपके लिए सभी क्षेत्रों में लाभदायक रहेगा। किसी नए कार्य के प्रारंभ करने का अवसर मिलेगा।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

15 मार्च : रविवार : पापमोचनी एकादशी व्रत
16 मार्च : सोमवार : सोम प्रदोष व्रत
17 मार्च : मंगलवार : मास शिवरात्रि व्रत
18 मार्च : बुधवार : अमावस
19 मार्च : गुरुवार : वासंत नवरात्र प्रारंभ, कलश स्थापना

भाग्योदय
●**ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल**
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

हिमंत को फिर मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प

पार्टी जिसे टिकट देगी, उसे जिताएंगे : पीयूष

जन जन विचार ...✍ रोहा

61 नंबर रोहा विधानसभा क्षेत्र में आगामी चुनावों की तैयारी को लेकर भाजपा ने संगठनात्मक गतिविधियां तेज कर दी है। इसी क्रम में रोहा स्थित महेंद्र नाथ हजारिका भवन में विधानसभा स्तरीय भाजपा कार्यकर्ता सम्मेलन एवं चुनावी सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में असम सरकार के सूचना एवं जनसंपर्क तथा जल संसाधन मंत्री पीयूष हजारिका मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

सभा को संबोधित करते हुए मंत्री हजारिका ने कहा कि भाजपा एक अनुशासित संगठन है और पार्टी जिसे भी उम्मीदवार के रूप में टिकट देगी, सभी कार्यकर्ता मिलकर उसे विजयी बनाएंगे।

उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं का एकमात्र लक्ष्य राज्य में भाजपा की सरकार को फिर से मजबूत बनाना और मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा को पुन: मुख्यमंत्री बनाना है।

उन्होंने कार्यकर्ताओं से संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और आगामी चुनाव के लिए अभी से सक्रिय रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भाजपा की ताकत उसके समर्पित कार्यकर्ता हैं और उनकी मेहनत से ही पार्टी लगातार जनसमर्थन प्राप्त कर रही है।

पत्रकारों से बातचीत के दौरान मंत्री हजारिका ने विधायक अखिल गोगोई के बयानों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वे उनके आरोपों का जवाब देते-देते थक चुके हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा विकास और संगठन को मजबूत करने पर ध्यान देती है, जबकि अखिल गोगोई केवल तारीख पर तारीख बदलते रहते हैं।

कार्यक्रम में हाल ही में भाजपा में शामिल हुए विधायक शशिकांत दास, नगांव जिला भाजपा के प्रभारी अध्यक्ष सुवर्ण सिंह, भाजपा प्रदेश सचिव अभिजीत नाथ, जिला उपाध्यक्ष एवं रोहा विधानसभा चुनाव प्रभारी अमिताभ बोरा, जिला सचिव नवज्योति वरुवा, प्रवासी प्रभारी केआर दुग्गल सहित पार्टी के अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे।

सभा में रोहा विधानसभा क्षेत्र के 302 बूथों के अध्यक्ष, सदस्य, पंचायत एवं शक्ति केंद्रों के पदाधिकारी तथा सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और आगामी चुनाव में भाजपा को विजयी बनाने का संकल्प लिया।

लखीपुर कांग्रेस में प्रत्याशी को लेकर उबाल

तीन मंडलों ने दी विद्रोह की चेतावनी

जन जन विचार ...✍ सिलचर

आगामी असम विधानसभा चुनाव से पहले लखीपुर विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस के भीतर प्रत्याशी चयन को लेकर तीव्र असंतोष उभर आया है। स्थानीय कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से उम्मीदवार बदलने की मांग की है और चेतावनी दी है कि यदि निर्णय नहीं बदला गया तो क्षेत्र में बड़ा विद्रोह हो सकता है।

कांग्रेस द्वारा जारी पहली उम्मीदवार सूची में लखीपुर सीट से डॉ. एम. शांति कुमार सिंह को प्रत्याशी बनाया गया है। सूची सामने आते ही बिन्नाकांदी, लखीपुर और राजाबाजार ब्लॉक मंडल कांग्रेस के पदाधिकारी विरोध में सक्रिय हो गए। स्थानीय नेताओं का कहना है कि इस सीट से बाहरी व्यक्ति के बजाय क्षेत्र से जुड़े किसी स्थानीय नेता को टिकट दिया जाना चाहिए।

बताया जाता है कि इस सीट के लिए सुबीर सरकार, जय सिंह, नविना मजूमदार और पंडित हेमंत सिंह भी

टिकट के दावेदार थे, लेकिन अंततः पार्टी नेतृत्व ने डॉ. शांति कुमार सिंह के नाम पर मुहर लगा दी।

उम्मीदवार घोषित होने के बाद तीनों मंडल समितियों की बैठक में उनकी उम्मीदवारी को स्वीकार न करने का प्रस्ताव पारित किया गया। पदाधिकारियों ने स्पष्ट कहा कि यदि पार्टी का केंद्रीय और राज्य नेतृत्व इस निर्णय पर पुनर्विचार नहीं करता तो बड़े पैमाने पर विरोध और सामूहिक इस्तीफों की स्थिति बन सकती है।

इसके बाद लखीपुर कांग्रेस के नेताओं ने सिलचर जिला कांग्रेस कार्यालय पहुंचकर लिखित रूप में अपनी आपत्ति दर्ज कराई। मंडल अध्यक्ष महिबुर रहमान खान, प्रदीप पाल और प्रकाश त्रिवेदी समेत कई नेताओं ने हस्ताक्षरित पत्र में चेतावनी दी कि उम्मीदवार नहीं बदला गया तो लखीपुर कांग्रेस में गंभीर राजनीतिक संकट खड़ा हो सकता है।

सूत्रों के अनुसार पार्टी नेतृत्व के संकेत के बाद फिलहाल स्थानीय नेताओं ने खुला विरोध रोक दिया था और अपने निर्णय को गोपनीय रखा था। लेकिन हाल ही में यह गोपनीय प्रस्ताव लीक होकर सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिससे पार्टी के अंदर नई हलचल मच गई है। फिलहाल लखीपुर के तीनों मंडल कांग्रेस नेता पार्टी की दूसरी उम्मीदवार सूची का इंतजार कर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि दूसरी सूची में भी प्रत्याशी नहीं बदला गया तो क्षेत्र में व्यापक स्तर पर विरोध और विद्रोह की स्थिति पैदा हो सकती है। राजनीतिक सूत्रों के अनुसार बी-फॉर्म जारी होने तक उम्मीदवार बदलने की संभावना बनी रहती है, इसलिए स्थानीय नेता अंतिम निर्णय का इंतजार कर रहे हैं।

मध्य गुवाहाटी : भाजपा से प्रांतोष राय की दावेदारी चर्चा में

जन जन विचार ...✍ गुवाहाटी

राज्य में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक गतिविधियां तेज होती जा रही हैं। विशेषकर मध्य गुवाहाटी विधानसभा क्षेत्र में विभिन्न दलों के संभावित उम्मीदवारों के बीच टिकट को लेकर हलचल बढ़ गई है।

इसी बीच भारतीय जनता पार्टी से लंबे समय से जुड़े वरिष्ठ कार्यकर्ता और सामाजिक कार्यकर्ता प्रांतोष राय का नाम संभावित उम्मीदवारों में प्रमुखता से चर्चा में है। जानकारी के अनुसार, प्रांतोष राय वर्ष 1980 में औपचारिक रूप से भाजपा से जुड़े थे और तब से लगातार पार्टी की संगठनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते आ रहे हैं। गुवाहाटी जिला भाजपा समिति में वे विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं तथा वर्तमान में राज्य भाजपा के कार्यकारी सदस्य के रूप में कार्यरत हैं।

बताया जाता है कि लगभग चार दशकों से अधिक समय से वे भाजपा के साथ जुड़े हुए हैं और पार्टी के विभिन्न कार्यक्रमों, जनसंपर्क अभियानों तथा संगठन विस्तार के कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाते रहे हैं। छात्र जीवन के दौरान भी वे सामाजिक और जनआंदोलनों से जुड़े रहे, जिससे उन्हें क्षेत्र में एक सक्रिय और अनुभवी कार्यकर्ता के रूप में पहचान मिली।

सूत्रों के अनुसार, मध्य गुवाहाटी सीट से भाजपा टिकट के लिए उन्होंने अपनी दावेदारी पार्टी नेतृत्व के समक्ष रखी है और इस संबंध में मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा को भी आवेदन सौंपा है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

विश्व विजेता भारत

साथ-साथ हेड कोच गौतम गंभीर की रणनीति और दृढ़ता का बड़ा योगदान रहा। फाइनल से पहले टीम संयोजन को लेकर कई अटकलें लग रही थीं, लेकिन गंभीर ने विनिंग कॉम्बिनेशन पर भरोसा बनाए रखा। उनका यह फैसला सही साबित हुआ जब अभिषेक शर्मा ने शानदार अर्धशतक लगाकर टीम को मजबूत शुरुआत दी।

हालांकि मैदान पर 11 खिलाड़ियों की चमक दिखाई देती है, लेकिन इस जीत की असली नींव पर्दे के पीछे काम करने वाले सपोर्ट स्टाफ ने रखी। बैटिंग कोच सितांशु कोटक ने बल्लेबाजों को आक्रामक और आत्मविश्वासी बनाया, जबकि गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल ने गेंदबाजों में धार पैदा की। फील्डिंग कोच टी. दिलीप की मेहनत का नतीजा था कि टीम ने टूर्नामेंट में कई शानदार कैच और चुस्त फील्डिंग का प्रदर्शन किया। वहीं सहायक कोच रयान टेन डोशेट ने मैच दर मैच रणनीतिक तैयारी को मजबूत बनाया।

टीम इंडिया की यह जीत केवल एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयास, दूरदर्शी नेतृत्व और अनुशासित टीमवर्क की मिसाल बनकर सामने आई है। यही कारण है कि आज भारतीय क्रिकेट दुनिया की सबसे सशक्त टी20 टीम के रूप में स्थापित हो चुकी है।

संपादकीय

अलविदा बिहार

बिहार की राजनीति में लंबे समय से निर्णायक भूमिका निभाने वाले नेता नीतीश कुमार का मुख्यमंत्री पद छोड़कर राज्यसभा जाने का निर्णय केवल एक व्यक्तिगत राजनीतिक कदम नहीं है। यह बिहार की सत्ता राजनीति में बदलते समीकरणों और कमजोर पड़ती राजनीतिक पकड़ का भी संकेत देता है। सवाल यह है कि क्या यह फैसला स्वेच्छा का है, या फिर परिस्थितियों से उपजा एक राजनीतिक समझौता?

करीब दो दशकों तक बिहार की राजनीति में केंद्र में रहे नीतीश कुमार ने विकास, सुशासन और सामाजिक संतुलन की राजनीति का दावा किया। यह भी सच है कि उन्होंने राज्य को 'जंगलराज' की छवि से बाहर निकालने और बुनियादी ढांचे के विकास में अहम भूमिका निभाई।

हाल के राजनीतिक हालात में भारतीय जनता पार्टी बिहार में सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरी है। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि सत्ता का केंद्र धीरे-धीरे भाजपा की ओर खिसके। इस संदर्भ में नीतीश कुमार का दिल्ली की राजनीति की ओर रुख करना कई लोगों को सत्ता संतुलन का एक 'सम्मानजनक रास्ता' भी लगता है।

सच यह है कि बिहार की राजनीति अब एक नए दौर की दहलीज पर खड़ी है। यदि नीतीश कुमार सक्रिय राज्य राजनीति से दूर होते हैं, तो यह केवल एक नेता का पद परिवर्तन नहीं होगा, बल्कि उस राजनीतिक युग का अंत भी हो सकता है जिसने लंबे समय तक बिहार की सत्ता और विमर्श दोनों को प्रभावित किया।

सुलगता सवाल? आपके विचार

साइबर ठगी पर लगाम

देश में डिजिटल भुगतान व्यवस्था के तेज विस्तार ने लोगों के लेनदेन के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। मोबाइल ऐप, ऑनलाइन बैंकिंग और यूपीआई जैसे मंचों के कारण भुगतान अब पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है। लेकिन इस सुविधा के साथ साइबर ठगी और ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामले भी तेजी से बढ़े हैं। ऐसे में भारतीय रिजर्व द्वारा प्रस्तावित नया ढांचा डिजिटल उपभोक्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच बन सकता है।

आरबीआई ने हाल ही में एक मसौदा जारी कर डिजिटल धोखाधड़ी से पीड़ित ग्राहकों को राहत देने के लिए क्षतिपूर्ति व्यवस्था का प्रस्ताव रखा है। इसके अनुसार यदि किसी ग्राहक को धोखाधड़ीपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन से 50,000 रुपए तक का नुकसान होता है और वह तुरंत इसकी सूचना देता है, तो उसे नुकसान का 85 प्रतिशत या अधिकतम 25,000 रुपए तक मुआवजा मिल सकता है। यह व्यवस्था उपभोक्ता विश्वास को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम मानी जा रही है।

दरअसल, फिशिंग लिंक, फर्जी ग्राहक सेवा कॉल, ओटीपी ठगी और मालवेयर जैसे तरीके अब आम हो चुके हैं। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार 2024-25 में कार्ड और इंटरनेट आधारित धोखाधड़ी के मामलों की हिस्सेदारी कुल मामलों का लगभग 67 प्रतिशत रही। इससे स्पष्ट है कि डिजिटल भुगतान व्यवस्था के साथ सुरक्षा ढांचे को मजबूत करना समय की बड़ी जरूरत बन चुका है।

यूरोप का बुरा हाल

जन जन विचार
...✍ नीरज कुमार दुबे

जो यूरोप कल तक रूस पर कड़े प्रतिबंध लगा रहा था और उससे गैस तथा तेल खरीदने वाले देशों पर पेनल्टी लगाने की मांग करते हुए यूक्रेन के साथ खड़ा नजर आ रहा था, वही यूरोप अब मध्य पूर्व में संकट गहराते ही फिर से रूस की ओर देखने लगा है। दरअसल अमेरिका, इजराइल और ईरान के बीच बढ़ते संघर्ष तथा फारस की खाड़ी में तनाव के कारण वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति पर खतरा मंडराने लगा है। ऐसे में ऊर्जा संकट से जूझता यूरोप रूस से गैस और तेल की संभावित आपूर्ति को लेकर नई चर्चा कर रहा है। इस पूरे घटनाक्रम ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और ऊर्जा बाजार दोनों में रूस को अप्रत्याशित लाभ की स्थिति में ला खडा किया है।

हम आपको बता दें कि मध्य पूर्व में बढ़ते युद्ध के कारण वैश्विक तेल बाजार में जबरदस्त उथल पुथल देखने को मिल रही है। फारस की खाड़ी के प्रमुख समुद्री मार्ग हार्मुज जलडमरूमध्य से दुनिया के लगभग पांचवें हिस्से का तेल और गैस गुजरता है। ईरान से जुड़े तनाव और संभावित आपूर्ति बाधा की आशंका के कारण तेल की कीमतें तेजी से बढ़ गईं। सप्ताह की शुरुआत में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमत प्रति बैरल सौ डॉलर से ऊपर पहुंच गई। बाद में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बयान के बाद कीमतों में कुछ गिरावट आई, फिर भी युद्ध से पहले की तुलना में तेल करीब सत्ताईस प्रतिशत महंगा बना हुआ है।

ऊर्जा विशेषज्ञों का मानना है कि इस स्थिति का सबसे बड़ा आर्थिक लाभ रूस को मिल सकता है। रूस पहले से ही दुनिया के सबसे बड़े तेल निर्यातकों में शामिल है। यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों ने उस पर कठोर आर्थिक प्रतिबंध लगाए थे, लेकिन अब ऊर्जा बाजार में उथल-पुथल के कारण इन प्रतिबंधों का प्रभाव कम होता दिखाई दे रहा है। ऊंची कीमतों के कारण रूस को अपने तेल निर्यात से अधिक राजस्व मिलने की संभावना है, जिससे उसकी अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल सकती है।

अमेरिका ने भारत को भी कथित रूप से अस्थायी छूट देते हुए रूसी कच्चा तेल खरीदने की अनुमति दी है। इस निर्णय के बाद रूस के तेल निर्यात में तेजी आई है। पहले जहां रूसी तेल लगभग पचास डॉलर प्रति बैरल के आसपास बिक रहा था, वहीं अब इसकी कीमत करीब नब्बे डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई है। इससे रूस को राजस्व में भारी बढ़ोतरी मिल रही है।

ऊर्जा बाजार के आंकड़े बताते हैं कि समुद्र में टैंकरों पर जमा रूसी तेल का भंडार भी तेजी से कम हो रहा है, जिससे स्पष्ट है कि खरीदार देशों तक आपूर्ति तेजी से पहुंच रही है। फरवरी के अंत तक जहां टैंकरों में लगभग एक सौ बत्तीस मिलियन बैरल रूसी तेल जमा था, वहीं अब यह घटकर करीब एक सौ अठारह मिलियन बैरल रह गया है। इसका अर्थ है कि वैश्विक बाजार में रूसी तेल की मांग फिर बढ़ने लगी है।

यदि मध्य पूर्व में संघर्ष लंबा चलता है और खाड़ी क्षेत्र से तेल निर्यात बाधित होता है तो रूस को अरबों डॉलर का अतिरिक्त राजस्व मिल सकता है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि ऊंची कीमतों और आपूर्ति संकट के चलते रूस को आय में कई अरब डॉलर का अतिरिक्त लाभ हो सकता है।

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भी संकेत दिया है कि यदि यूरोपीय देश राजनीतिक दबाव से मुक्त होकर दीर्घकालिक सहयोग चाहते हैं तो रूस उन्हें फिर से तेल और गैस आपूर्ति करने को तैयार है। पुतिन का कहना है कि रूस ने कभी यूरोप के साथ ऊर्जा सहयोग से इनकार नहीं किया, लेकिन यूक्रेन युद्ध के बाद यूरोप ने स्वयं रूसी ऊर्जा पर निर्भरता कम करने का निर्णय लिया था।

हम आपको बता दें कि यूक्रेन युद्ध से पहले यूरोप अपनी गैस जरूरतों का चालीस प्रतिशत से अधिक हिस्सा रूस से खरीदता था। लेकिन प्रतिबंधों और वैकल्पिक स्रोतों की खोज के कारण यह हिस्सा घटकर वर्ष 2025 तक लगभग तेरह प्रतिशत रह गया। यूरोपीय संघ ने समुद्री मार्ग से आने वाले रूसी तेल पर प्रतिबंध लगा दिया था और कई पाइपलाइन मार्ग भी बंद हो गए थे।

हालांकि मौजूदा संकट में स्थिति बदलती दिखाई दे रही है। यूरोप ने अभी तक रूसी तरल प्राकृतिक गैस पर पूर्ण प्रतिबंध लागू नहीं किया है और प्रस्तावित योजना के अनुसार इसे 2027 तक धीरे धीरे समाप्त किया जाना है। इस कारण यूरोप के कुछ देश आपूर्ति संकट की स्थिति में फिर से रूसी गैस खरीदने पर विचार कर सकते हैं।

फिर भी रूस की क्षमता पूरी तरह असीमित नहीं है। वर्षों से लगे प्रतिबंधों और यूक्रेन से हुए हमलों के कारण उसकी ऊर्जा अवसंरचना के कुछ हिस्सों को नुकसान पहुंचा है। इसके अलावा जहाजरानी और बीमा से जुड़ी बाधाएं भी रूसी निर्यात को सीमित करती हैं। वैसे रूस का अधिकांश तेल फिलहाल भारत और चीन जैसे सीमित खरीदारों को ही जा रहा है।

इसके बावजूद मौजूदा वैश्विक परिस्थिति का सामरिक महत्व बहुत बड़ा है। मध्य पूर्व में युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ऊर्जा आपूर्ति पर नियंत्रण अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण हथियार बना हुआ है। रूस के पास विशाल तेल और गैस भंडार हैं और संकट के समय यह उसे आर्थिक और कूटनीतिक दोनों तरह का प्रभाव प्रदान करते हैं।

दूसरी ओर यूरोप के सामने भी एक कठिन विकल्प खड़ा हो गया है। यदि मध्य पूर्व से ऊर्जा आपूर्ति बाधित होती है तो उसे अपने पुराने ऊर्जा स्रोत यानी रूस की ओर फिर से देखना पड़ सकता है। इस प्रकार मध्य पूर्व का युद्ध केवल क्षेत्रीय संघर्ष नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विक ऊर्जा संतुलन और भू राजनीतिक शक्ति समीकरण को भी नए सिरे से आकार दे रहा है।

भारत के पास 50-60 दिन का इमरजेंसी ऑयल रिजर्व

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

अमेरिका-ईरान तनाव के बीच वैश्विक तेल आपूर्ति पर संकट की आशंका गहरा गई है। होर्मुज स्ट्रेट में बढ़ते तनाव के कारण दुनिया की बड़ी तेल सप्लाई प्रभावित होने की आशंका है। ऐसे में सवाल उठने लगा है कि आपात स्थिति में भारत के पास कितना तेल भंडार उपलब्ध है।

ऊर्जा विशेषज्ञों के अनुसार भारत अपनी कुल तेल जरूरत का लगभग 90 प्रतिशत आयात करता है। वर्तमान में स्ट्रैटेजिक रिजर्व, रिफाइनरी स्टॉक और कमर्शियल भंडार को मिलाकर भारत के पास लगभग 50-60 दिन का तेल स्टॉक मौजूद है। यह करीब 25 करोड़ बैरल (लगभग 4,000 करोड़ लीटर) के बराबर बताया जाता है। हालांकि तकनीकी कारणों से पूरा स्टॉक उपयोग में नहीं लाया जा सकता, इसलिए वास्तविक उपलब्धता लगभग 40 दिनों की मानी जाती है। भारत ने रणनीतिक तौर पर अपने तेल भंडार को विशाखापत्तनम, मंगलौर और पादुर में बनाई गई विशाल अंडरग्राउंड स्ट्रैटेजिक गुफाओं में सुरक्षित रखा है। इसके अलावा कुछ भंडार तेल टैंकों, पाइपलाइनों और तटीय जहाजों में भी रखा जाता है।

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि देश में ईंधन की कोई कमी नहीं है और सरकार स्थिति पर लगातार नजर रखे हुए है।

विशेषज्ञों के अनुसार चीन के पास बड़े पैमाने पर रणनीतिक तेल भंडार मौजूद है, जबकि पाकिस्तान और बांग्लादेश के पास अपेक्षाकृत सीमित अवधि का ही तेल स्टॉक है। इसलिए यदि वैश्विक आपूर्ति लंबे समय तक बाधित होती है तो इन देशों पर दबाव बढ़ सकता है।

तेल संकट की आहट

राहत : होर्मुज से गुजरकर मुंबई पहुंचा कच्चे तेल से भरा जहाज

नई दिल्ली/मुंबई। पश्चिम एशिया में बढ़ते युद्ध तनाव के बीच भारत के लिए राहत भरी खबर सामने आई है। सऊदी अरब से कच्चा तेल लेकर आने वाला विशाल टैंकर शेनलॉन्ग सुरक्षित रूप से मुंबई बंदरगाह पहुंच गया है। माना जा रहा है कि इससे देश में तेल और एलपीजी आपूर्ति को लेकर बनी चिंता कुछ हद तक कम हो सकती है।

लाइबेरिया ध्वज वाला यह सुएजमैक्स टैंकर करीब 1,35,335 मीट्रिक टन सऊदी कच्चा तेल लेकर आया है। जहाज 1 मार्च को सऊदी अरब के रास तनूरा बंदरगाह से रवाना हुआ था और 8 मार्च को रणनीतिक रूप से बेहद संवेदनशील होर्मुज स्ट्रेट से होकर गुजरा। क्षेत्र में बढ़ते सैन्य तनाव और मिसाइल हमलों के खतरे के बीच जहाज को सुरक्षित निकालना बड़ी चुनौती माना जा रहा था।

बताया जाता है कि यात्रा के दौरान जहाज ने कुछ समय के लिए अपना ट्रैकिंग सिस्टम भी बंद कर दिया था, ताकि विवादित क्षेत्र से सुरक्षित तरीके से गुजर सके। भारतीय कैप्टन की सूझबूझ और सावधानी के कारण यह जहाज बिना किसी नुकसान के भारत पहुंचने में सफल रहा।

'संसद से नरेंद्र गायब, देश से सिलेंडर गायब'

नई दिल्ली। देश में एलपीजी आपूर्ति को लेकर उठ रही चिंताओं के बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि ऊर्जा संकट को लेकर सरकार की तैयारी पर्याप्त नहीं दिख रही और यदि समय रहते कदम नहीं उठाए गए तो करोड़ों लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

संसद परिसर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री की संसद में अनुपस्थिति पर भी सवाल उठाए। उन्होंने सोशल मीडिया पर विरोध प्रदर्शन की तस्वीरें साझा करते हुए टिप्पणी की, 'संसद से नरेंद्र गायब, देश से सिलेंडर गायब।'

राजीव कुमार महत्त को 'भारत गौरव अवॉर्ड'

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था महारंग साहित्य परिषद द्वारा आयोजित समारोह में प्रख्यात साहित्यकार राजीव कुमार महत्त को साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए 'भारत गौरव अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। चाय श्रमिक परिवार में जन्मे महत्त ने कठिन परिस्थितियों के बावजूद अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर साहित्य जगत में विशेष पहचान बनाई है। उनकी रचनाओं में विशेष रूप से चाय समुदाय और वंचित वर्गों के जीवन-संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। सम्मान प्राप्त करने के बाद महत्त ने कहा कि यह पुरस्कार केवल उनका नहीं, बल्कि चाय समुदाय और संघर्षशील परिवारों का सम्मान है। उन्होंने युवाओं से साहित्य और शिक्षा के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। इस उपलब्धि से उनके गृह नगर डिब्रूगढ़ में खुशी और गर्व का माहौल है। सामाजिक संगठनों और शिक्षाविदों ने इसे पूरे क्षेत्र के लिए प्रेरणादायक उपलब्धि बताया है।

बादल और उद्धव के बाद अब नीतीश भी!

'मित्रों' को हटाने की 'नई राजनीतिक रणनीति'

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

देश की राजनीति में एक बार फिर बड़ा सवाल खड़ा हो गया है- क्या भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अपने 'मजबूत मित्रों' को सत्ता से हटाने के लिए सुनियोजित राजनीतिक रणनीति अपना रही है? पंजाब में सुखविंदर सिंह बादल, महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे और अब बिहार में नितीश कुमार को लेकर उठे घटनाक्रमों ने इस बहस को और तीखा बना दिया है।

पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह अलग-अलग राज्यों में सरकारों के समीकरण अचानक बदले हैं, उसने विपक्ष को भाजपा पर सीधे आरोप लगाने का मौका दिया है। विपक्ष का दावा है कि भाजपा अपने राजनीतिक विस्तार के लिए सत्ता संतुलन बदलने की कोशिश करती है, जबकि भाजपा इसे लोकतांत्रिक प्रक्रिया और गठबंधन राजनीति का स्वाभाविक परिणाम बताती है।

महाराष्ट्र से शुरू हुई बड़ी बहस

वर्ष 2022 में महाराष्ट्र की राजनीति में बड़ा भूचाल आया, जब शिवसेना के भीतर बगावत के बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को पद छोड़ना पड़ा। इसके बाद एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में नई सरकार बनी, जिसमें भाजपा सत्ता का प्रमुख हिस्सा बनी। इस घटनाक्रम ने पूरे देश में 'ऑपरेशन राजनीति' को लेकर बहस छेड़ दी।

बिहार में भी बदला गणित

बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की राजनीति कई बार करवट ले चुकी है। बदलते गठबंधनों और राजनीतिक समीकरणों के बीच मुख्यमंत्री पद को लेकर लगातार अनिश्चितता बनी रही।

पंजाब में भी बदले रिश्ते

पंजाब में लंबे समय तक भाजपा की सहयोगी रही शिरोमणि अकाली दल से दूरी बनने के बाद सुखविंदर सिंह बादल की राजनीति भी नए दौर में प्रवेश कर गई। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इससे राज्य की राजनीति में शक्ति संतुलन पूरी तरह बदल गया।

विपक्ष इसे भाजपा की 'सत्ता विस्तार की नीति' बता रहा है, जबकि भाजपा का कहना है कि लोकतंत्र में सरकारें बहुमत से बनती और गिरती हैं।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

बंद हो सकते हैं...

पर खतरा और खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि जैसी समस्याएं भी सामने आ सकती हैं। कुछ रेस्टोरेंट संचालक वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की व्यवस्था करने में जुट गए हैं, लेकिन पारंपरिक भारतीय व्यंजनों वाले रसोईघरों के लिए यह आसान नहीं है।

हालांकि अस्पतालों और शैक्षणिक संस्थानों जैसे आवश्यक क्षेत्रों को वाणिज्यिक एलपीजी आपूर्ति जारी रखने की बात कही गई है। अन्य क्षेत्रों के लिए तेल कंपनियों की एक समिति मांग की समीक्षा करेगी, लेकिन आयातित गैस पर निर्भरता के कारण सभी मांगों को पूरा कर पाना मुश्किल बताया जा रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि जल्द समाधान नहीं निकला तो गुवाहाटी के खाद्य व्यवसाय और उपभोक्ताओं दोनों पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ सकता है।

चुनाव पूर्व असम...

से एक चाय बागान श्रमिक को पहला भूमि पट्टा प्रदान करेंगे, जिसके बाद पूरे राज्य में पात्र परिवारों को भूमि स्वामित्व प्रमाण पत्र देने की प्रक्रिया शुरू होगी। इसके अलावा प्रधानमंत्री 150 मेगावाट की कपिली पनबिजली परियोजना राष्ट्र को समर्पित करेंगे और करीब 10,000 करोड़ रुपए की अन्य परियोजनाओं का उद्घाटन भी करेंगे।

दौरे के दूसरे दिन प्रधानमंत्री सिलचर में सिलचर-गुवाहाटी एक्सप्रेसवे की आधारशिला रखेंगे। लगभग 22,000 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाला यह एक्सप्रेसवे बराक घाटी को राज्य के अन्य हिस्सों से तेज और बेहतर सड़क संपर्क प्रदान करेगा, जिससे व्यापार और आवागमन को नई गति मिलने की उम्मीद है।

प्रधानमंत्री अपने इस दौरे के दौरान राज्य के तीन अलग-अलग स्थानों पर जनसभाओं को भी संबोधित करेंगे। सरकार का मानना है कि इन परियोजनाओं से असम में बुनियादी ढांचे का विस्तार होगा और विकास की नई संभावनाएं खुलेंगी।

बगुला और केकड़ा

एक समय की बात है। एक तालाब में बहुत सारी मछलियां, मेंढक और केकड़े रहते थे। उसी तालाब के किनारे एक बूढ़ा बगुला रहता था। अब वह बूढ़ा हो गया था और पहले की तरह मछलियां पकड़ नहीं पाता था।

एक दिन उसने एक चाल चली। वह तालाब के किनारे उदास बैठ गया। मछलियों ने पूछा, 'बगुले दादा, आप इतने उदास क्यों हैं?'

बगुले ने दुखी होकर कहा, 'मैंने सुना है कि यह तालाब कुछ दिनों में सूख जाएगा। तब तुम सब मर जाओगे। मुझे तुम सबकी चिंता हो रही है।'

मछलियां डर गईं। उन्होंने कहा, 'दादा, हमें बचाने का कोई उपाय बताइए।'

बगुले ने कहा, 'मैं तुम सबको पास के एक बड़े और गहरे तालाब में पहुंचा सकता हूं।'

मछलियां उसकी बातों में आ गईं। बगुला रोज एक मछली को अपनी चोंच में लेकर उड़ जाता और रास्ते में एक चट्टान पर बैठकर उसे खा जाता।

एक दिन केकड़े की बारी आई। केकड़ा बगुले की पीठ पर बैठ गया। जब वे उड़ रहे थे तो केकड़े ने नीचे देखा कि चट्टान के पास मछलियों की हड्डियां पड़ी हैं। उसे समझ आ गया कि बगुला धोखा दे रहा है।

केकड़े ने तुरंत अपनी मजबूत पंजों से बगुले की गर्दन पकड़ ली और उसे मार दिया। फिर वह सुरक्षित वापस तालाब में लौट आया और सबको सच्चाई बता दी।

सीख : लालच और धोखे का अंत हमेशा बुरा होता है।

मुहावरे

हिंदी भाषा को समृद्ध और प्रभावशाली बनाने में मुहावरों का विशेष महत्व होता है। मुहावरे ऐसे विशेष वाक्यांश होते हैं जिनका अर्थ उनके शब्दों से अलग और गहरा होता है। इनके प्रयोग से भाषा अधिक रोचक, सरल और प्रभावशाली बन जाती है। दैनिक जीवन में भी हम कई मुहावरों का उपयोग करते हैं, जिससे बात को कम शब्दों में स्पष्ट और प्रभावी ढंग से कहा जा सकता है। विद्यार्थियों के लिए मुहावरों का ज्ञान भाषा को बेहतर ढंग से समझने और सही तरीके से अभिव्यक्त करने में बहुत सहायक होता है। नीचे कुछ प्रचलित मुहावरे उनके अर्थ और उदाहरण सहित दिए जा रहे हैं।

1. **आँखों का तारा (बहुत प्रिय व्यक्ति) :** रोहित अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।

2. **नाक कटना (अपमान होना):** परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने से स्कूल की नाक कट गई।

3. **नौ दो ग्यारह होना (भाग जाना):** पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

4. **दाँत खट्टे करना (बुरी तरह हराना):** हमारी टीम ने विरोधी टीम के दाँत खट्टे कर दिए।

5. **हाथ पर हाथ धरे बैठना (कुछ न करना):** परीक्षा पास करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, हाथ पर हाथ धरे बैठने से सफलता नहीं मिलती।

विचार

गलतियों से सीखना ही सच्ची समझदारी है।

लघु कथा

लगन का फल

एक गांव में रवि नाम का एक लड़का रहता था। वह पढ़ाई में बहुत तेज नहीं था, इसलिए अक्सर परीक्षा में कम अंक लाता था। उसके दोस्त उसका मजाक उड़ाते थे और कहते थे कि वह कभी सफल नहीं हो पाएगा।

लेकिन रवि ने हार नहीं मानी। उसने रोज थोड़ा-थोड़ा पढ़ना शुरू किया। वह अपने शिक्षक से सवाल पूछता और जो समझ में नहीं आता, उसे बार-बार पढ़ता। धीरे-धीरे उसकी पढ़ाई में सुधार होने लगा।

कुछ महीनों बाद परीक्षा हुई। इस बार रवि ने बहुत अच्छे अंक प्राप्त किए। उसके शिक्षक और माता-पिता बहुत खुश हुए। उसके दोस्त भी हैरान रह गए।

तब शिक्षक ने सभी बच्चों से कहा, 'सफलता अचानक नहीं मिलती। मेहनत और लगन से ही मंजिल हासिल होती है।'

पहेली

न मुंह है, न पैर है,
फिर भी रोज चलती हूं।
समय बताना मेरा काम,
घर-घर में मैं मिलती हूं।
बताओ मैं कौन हूँ?
उत्तर : घड़ी

प्यारे बच्चो, नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं, जो एक कहनी कह रहे हैं। आप लोग चित्रों को ध्यानपूर्वक देखें अपनी कल्पना से एक कहानी की रचना करें और हमें ह्वाट्सऐप नंबर 6900126012 पर अपनी कहानी भेंज दें। सर्वश्रेष्ठ कहानी प्रकाशित की जाएगा। हां, अपना नाम, स्कूल का नाम और कक्षा लिखना न भूलें।

नन्हें बत्तख को तालाब तक पहुंचने में मदद कीजिए।

पारंपरिक खेल : पिट्ठू (सात पत्थर)

भारत में कई ऐसे पारंपरिक खेल हैं जो आज धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। ऐसा ही एक रोचक खेल है पिट्ठू, जिसे कई जगह सात पत्थर या लगोरी भी कहा जाता है।

इस खेल को खेलने के लिए सात छोटे पत्थरों को एक के ऊपर एक रखकर ढेर बनाया जाता है। खिलाड़ी दो टीमों में बंट जाते हैं। पहली टीम का खिलाड़ी गेंद से पत्थरों के ढेर को गिराने की कोशिश करता है। अगर पत्थर गिर जाते हैं, तो उसी टीम के खिलाड़ी फिर से पत्थरों को जोड़ने की कोशिश करते हैं। दूसरी टीम गेंद से उन्हें मारकर रोकने की कोशिश करती है।

अगर पहली टीम पत्थरों को फिर से जमा देती है, तो वह टीम जीत जाती है। लेकिन अगर दूसरी टीम गेंद से खिलाड़ियों को मार देती है, तो उनकी बारी खत्म हो जाती है।

यह खेल बच्चों में फुर्ती, ध्यान और टीम भावना को बढ़ाता है। पहले बच्चे मोहल्लों और गांवों में शाम के समय बड़े उत्साह से यह खेल खेलते थे। आज मोबाइल और वीडियो गेम के कारण ऐसे पारंपरिक खेल कम होते जा रहे हैं। हमें चाहिए कि हम इन पुराने खेलों को फिर से अपनाएं, क्योंकि ये खेल हमारे स्वास्थ्य और आनंद दोनों के लिए बहुत अच्छे हैं।

जिंदगीनामा : संस्कृति, प्रेम व सांप्रदायिक त्रासदी का यथार्थ

जन जन विचार

...✍ डॉ. मुकेश कुमार
हिंदी विभाग,
चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी
जींद (हरियाणा)

प्रसिद्ध हिंदी लेखिका कृष्णा सोबती का जन्म 18 फरवरी 1925 को अविभाजित भारत के गुजरात (पंजाब) में हुआ था। इस दृष्टि से 2025 में उनका जन्म-शताब्दी वर्ष पूर्ण हुआ। उनका प्रसिद्ध उपन्यास जिन्दगीनामा 1979 ई. में प्रकाशित हुआ, जो हिंदी साहित्य की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कृतियों में माना जाता है। इस उपन्यास की साहित्यिक महत्ता और सांस्कृतिक मूल्य के कारण उन्हें 1980 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हिंदी साहित्य में कुछ रचनाएं ऐसी होती हैं जो केवल कथा न होकर अपने समय, समाज और संस्कृति का जीवंत इतिहास बन जाती हैं। प्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती का उपन्यास जिन्दगीनामा ऐसी ही महत्तवपूर्ण कृति है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने पंजाब के ग्रामीण जीवन, उसकी सांस्कृतिक विरासत और मानवीय संबंधों की गहरी संवेदना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें प्रेम, सामाजिक संबंध, श्रमशील जीवन, सांझी संस्कृति और उभरती सांप्रदायिकता जैसे अनेक पहलुओं का यथार्थपूर्ण चित्रण मिलता है।

इस उपन्यास में अविभाजित पंजाब का अतीत और वर्तमान अपनी पूरी गरिमा, रंग-रूप और मानवीय ऊष्मा के साथ उपस्थित होता है। यदि कोई पाठक पंजाब की मिट्टी की गंध, उसके उत्सवों की मिठास, खेतों की हरियाली, लोकजीवन की आत्मीयता और सामूहिक जीवन की अनुभूति करना चाहता है, तो 'जिन्दगीनामा' उसके लिए अत्यंत महत्तववपूर्ण रचना सिद्ध होती है। इस उपन्यास को पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है मानो पूरा पंजाब अपनी जीवंतता के साथ पाठक के सामने उपस्थित हो गया हो। यहां लोकगीतों की ध्वनि है, मेलों की रौनक है, श्रम करते किसानों की छवि है और मनुष्यता की वह गर्माहट भी है, जो पंजाब की पहचान बनी रही है।

किंतु इसी जीवन के भीतर राजनीतिक स्वार्थ और सांप्रदायिक विभाजन की पीड़ा भी दिखाई देती है, जिसने इस सांझी संस्कृति को गहराई से आहत किया। इसलिए 'जिन्दगीनामा' केवल जीवन का उत्सव नहीं, बल्कि इतिहास की त्रासदी का भी संवेदनशील

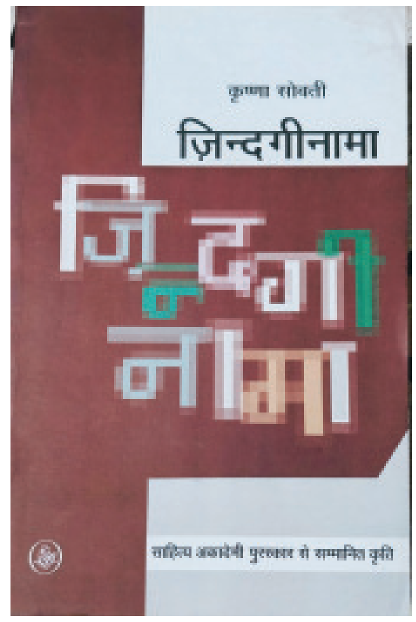

दस्तावेज है। कृष्णा सोबती की रचनात्मक यात्रा में 'मित्रों मरजानी' से लेकर 'जिन्दगीनामा' तक एक निरंतरता दिखाई देती है और वह है उनकी लेखनी में उपस्थित 'पंजाबियत' और जीवन के प्रति जिंदादिली। उनके लेखन में एक विशेष आत्मविश्वास, ठसक और स्वाभाविकता दिखाई देती है। वे अपने पात्रों को उसी सहजता और निर्भीकता के साथ प्रस्तुत करती हैं, जैसे वह जीवन वास्तव में मौजूद है।

'जिन्दगीनामा' की शुरुआत एक लंबी काव्यमय प्रस्तावना से होती है, जो उपन्यास की भावभूमि को स्पष्ट करती है। इसमें पंजाब की धरती को एक उर्वर और सृजनशील मां के रूप में चित्रित किया गया है। चनाब और झेलम की नदियां इस धरती की जीवनधारा के रूप में उपस्थित हैं। धरती का मातृत्व यहां अत्यंत काव्यमय शैली में व्यक्त हुआ है। साथ ही लेखिका ने मेहनतकश स्त्रियों का भी अत्यंत सजीव चित्रण किया है। चरखा कातती, सूत बुनती और श्रम में रची-बसी स्त्रियां केवल घरेलू जीवन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक और आर्थिक जीवन की महत्वपूर्ण धुरी हैं।

यह उपन्यास अविभाजित पंजाब के एक गांव शाहपुर की कथा को केंद्र में रखकर लिखा गया है, जहां हिंदू, मुसलमान और सिख समुदाय के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। उनके बीच आत्मीयता, सहयोग और भाईचारे का संबंध दिखाई देता है। उपन्यास की शुरुआत शाह और शाहनी के दाम्पत्य जीवन से होती है। उनके बीच का प्रेम, आत्मीयता और संतान की कामना कथा को मानवीय आधार प्रदान करती है। पुत्र 'लाली' का जन्म इस कथा को आगे बढ़ाता है और ग्रामीण जीवन की भावनात्मक संरचना को उजागर करता है।

उपन्यास में पंजाब की कृषक संस्कृति का अत्यंत जीवंत चित्रण मिलता है। खेतों में श्रम करते किसान, लोकगीत गाते लोग, मेलों और त्योहारों की रौनक-ये सभी मिलकर ऐसे जीवन की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं जिसमें श्रम और उत्सव का सुंदर समन्वय है।

जन जन विचार
...✍ धनेश्वर चौधरी

आज के समय में प्रेरक साहित्य की कमी नहीं है, लेकिन बहुत-सी किताबें केवल सैद्धांतिक बातें करती हैं। 'यस वी कैन' इस दृष्टि से अलग और उल्लेखनीय है, क्योंकि यह किसी सिद्धांत या उधार की प्रेरणा नहीं बल्कि लेखक के अपने जीवन के अनुभवों से निकली हुई कहानी और सीख है।

पुस्तक समीक्षा
यस वी कैन- इफ आइ कैन डू इट, यू कैन डू इट टू
लेखक : पवन कुमार अगरवाला
प्रकाशक : भारतीय एसोसिएट्स
मूल्य : रु. 499 मात्र

संघर्ष से शुरू होती है कहानी

पुस्तक का पहला अध्याय 'माई स्ट्रगल : द रियल स्टोरी बिहाइंड हू आई बिकेम' लेखक के बचपन की कठिन परिस्थितियों का चित्र प्रस्तुत करता है। असम के एक चाय बागान क्षेत्र में साधारण घर, बिजली के बिना पढ़ाई और सीमित संसाधनों के बीच पला-बढ़ा एक बालक अपने दृढ़ संकल्प और मेहनत से आगे बढ़ता है। यह भाग पाठक को बताता है कि परिस्थितियां चाहे जितनी कठिन क्यों न हों, संकल्प और परिश्रम से रास्ता बनाया जा सकता है।

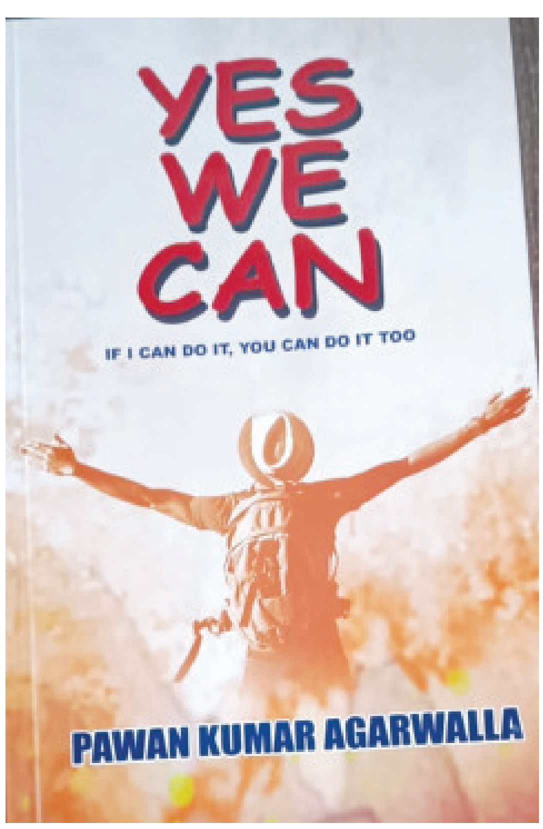

पुस्तक के लेखक पवन कुमार अगरवाला एक उद्यमी हैं जिन्होंने साधारण पृष्ठभूमि से उठकर अपने प्रयासों से जीवन में सफलता प्राप्त की। वे 'डाटामेशन' नामक संस्था के संस्थापक और सीईओ हैं और लंबे समय से युवाओं को प्रेरित करने का कार्य करते रहे हैं। पुस्तक में उन्होंने अपने संघर्ष, सीख और जीवन के सिद्धांतों को सरल और स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत किया है।

'यस आई कैन' केवल प्रेरक वाक्यों का संग्रह नहीं, बल्कि संघर्ष से सफलता तक की वास्तविक यात्रा का दस्तावेज है। यह पुस्तक पाठकों को यह विश्वास दिलाती है कि यदि संकल्प मजबूत हो और मेहनत निरंतर हो तो सीमाएं टूट सकती हैं।
आज के युवा-केंद्रित समाज में यह पुस्तक आशा, आत्मविश्वास और कर्मठता का संदेश देती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में अपनाने के लिए लिखी गई है।

सफलता के सिद्धांत

पुस्तक में लगभग 35 अध्याय हैं जिनमें सफलता, नेतृत्व, अनुशासन, आत्मविश्वास, निर्णय-क्षमता, आदतों की शक्ति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और तकनीक जैसे विषयों पर चर्चा की गई है। लेखक का स्पष्ट मत है कि सफलता कोई रहस्य या भाग्य का खेल नहीं, बल्कि कुछ निश्चित सिद्धांतों का परिणाम है-जिन्हें समझकर और लगातार अभ्यास में लाकर जीवन बदला जा सकता है।

युवाओं के लिए विशेष संदेश

यह पुस्तक विशेष रूप से युवाओं, छोटे कस्बों के छात्रों और उन लोगों के लिए प्रेरणादायक है जो सीमित संसाधनों के कारण स्वयं को पीछे महसूस करते हैं। लेखक का संदेश स्पष्ट है कि पृष्ठभूमि आपकी नियति नहीं है; सही सोच, अनुशासन और निरंतर सीखने की प्रवृत्ति आपको आगे बढ़ा सकती है।

पुस्तक की विशेषताएं

इस पुस्तक की भाषा सरल, सीधी और प्रेरक है। इसमें उपदेशात्मक शैली कम और अनुभवजन्य शैली अधिक है, जिससे पाठक को लेखक के जीवन की वास्तविक झलक मिलती है। साथ ही इसमें जीवन के छोटे-छोटे व्यावहारिक सूत्र भी दिए गए हैं जो पाठकों को अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करते हैं।

एलपीजी का बेहतर विकल्प इंडक्शन चूल्हा

जन जन विचार
...नई दिल्ली

बढ़ती गैस की कीमतों और मिडिल ईस्ट में चल रहे तनाव का असर अब लोगों की रसोई तक पहुंचने लगा है। ऐसे में कई लोग सोच रहे हैं कि खाना बनाने के लिए गैस चूल्हा सस्ता है या इंडक्शन। आपकी जेब के लिए कौन सा ऑप्शन बेस्ट है, आइए आसान भाषा में इसके पूरे कैलकुलेशन और फर्क को समझते हैं।

आजकल मिडिल ईस्ट की टेंशन और गैस की किल्लत की खबरों ने हर किसी को रसोई के बजट की चिंता में डाल दिया है। आलम यह है कि लोग अब गैस सिलेंडर के भरोसे बैठने के बजाय इंडक्शन की तरफ भाग रहे हैं। लेकिन क्या सच में इंडक्शन पर खाना बनाना गैस से सस्ता पड़ता है? आइए, इस उलझन को आसान भाषा में समझते हैं।

इंडक्शन और गैस : कौन है ज्यादा 'स्मार्ट'?

गैस चूल्हा (एलपीजी) : जब आप गैस जलाते हैं, तो उसकी 60 प्रतिशत गर्मी बर्तन के अगल-बगल से निकलकर हवा में बर्बाद

हो जाती है। यानी आप 100 रुपए की गैस जलाते हैं, तो सिर्फ 40 रुपए का काम होता है।

इंडक्शन : यह मैग्नेटिक फील्ड पर काम करता है। इसमें गर्मी सीधे बर्तन के पेंदे में पैदा होती है। इसकी कार्यक्षमता 90 फीसदी तक होती है, यानी इसमें बर्बादी न के बराबर है।

शुरुआत में थोड़ा खर्चा, फिर मजे ही मजे : इंडक्शन अपनाते वक्त आपको दो चीजों पर इन्वेस्ट करना होगा।

इंडक्शन चूल्हा : 2,000 से 4,000 रुपए के बीच एक अच्छा मॉडल मिल जाता है।

खास बर्तन : इंडक्शन के लिए फ्लैट बॉटम वाले स्टील या लोहे के बर्तन चाहिए होते हैं।

हालांकि यह खर्चा एक बार का है और एक साल के अंदर ही आपकी गैस की बचत से यह पैसा वसूल हो जाता है। इसके अलावा, इंडक्शन पर खाना बनाने से रसोई में गर्मी कम लगती है और सफाई करना भी बेहद आसान है।

घर के लिए तो इंडक्शन बेस्ट है, लेकिन बड़े होटलों और रेस्टोरेंट के लिए यह थोड़ा मुश्किल सौदा है। रेस्टोरेंट में बहुत ज्यादा खाना बनता है, जिसके लिए भारी-भरकम बिजली कनेक्शन चाहिए, जो काफी महंगा पड़ता है।

कमर्शियल ग्रेड का एक इंडक्शन सेटअप लगाने में ही करीब 3.5 लाख रुपए तक का खर्चा आ सकता है। अगर बिजली चली गई, तो इतने भारी लोड के लिए जनरेटर चलाना बहुत महंगा पड़ता है। इसलिए होटल वाले अभी भी गैस को ही बेहतर मानते हैं।

एक आम परिवार को गैस की बढ़ती कीमतों या किल्लत से बचना है, तो इंडक्शन एक बेहतरीन और बेस्ट ऑप्शन है। यह न सिर्फ आपके पैसे बचाएगा, बल्कि खाना बनाने के अनुभव को भी मॉडर्न बना देगा।

शहद से बनाएं घरेलू स्क्रब

चेहरे पर धूप के कारण होने वाली टैनिंग, पिंपल्स और डलनेस से परेशान लोगों के लिए शहद से बना घरेलू स्क्रब काफी फायदेमंद हो सकता है। यह स्क्रब प्राकृतिक सामग्री से तैयार होता है और त्वचा को साफ, मुलायम और चमकदार बनाने में मदद करता है। इसे घर पर आसानी से कुछ ही मिनटों में तैयार किया जा सकता है।

आवश्यक सामग्री : शहद, चावल का आटा, ग्लिसरीन, नारियल तेल।

स्क्रब बनाने की विधि : सबसे पहले एक कटोरी में चावल का आटा लें। इसमें एक चम्मच शहद और थोड़ा सा ग्लिसरीन मिलाएं। अब इसमें कुछ बूंद नारियल तेल डालें। सभी चीजों को अच्छी तरह मिलाकर गाढ़ा पेस्ट बना लें। तैयार स्क्रब को किसी एयर-टाइट डिब्बे में रख सकते हैं।

इस्तेमाल करने का तरीका : रात में सोने से पहले इस स्क्रब को चेहरे पर 30-40 मिनट के लिए लगाएं। फिर कच्चे दूध से हल्के हाथों से मसाज करें और चेहरा धो लें। इससे त्वचा की टैनिंग कम होती है और चेहरे पर प्राकृतिक चमक आती है।

समर ऑफिस लुक : ट्रेंडी प्रिंटेड शर्ट्स से बढ़ाएं अपना स्टाइल

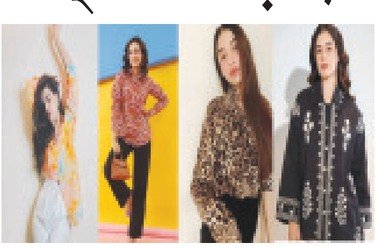

गर्मियों के मौसम में ऑफिस के लिए ऐसा आउटफिट चुनना जरूरी होता है जो आरामदायक भी हो और स्टाइलिश भी। ऐसे में प्रिंटेड शर्ट्स एक बेहतरीन विकल्प बनकर उभर रही हैं। सही प्रिंट और रंगों वाली शर्ट आपके पूरे ऑफिस लुक को नया और आकर्षक बना सकती है। इन्हें ट्राउजर, डेनिम जींस या स्कर्ट के साथ आसानी से स्टाइल किया जा सकता है।

टाई-डाई प्रिंट शर्ट

टाई-डाई प्रिंट इन दिनों काफी ट्रेंड में है। हल्के और रंग-बिरंगे पैटर्न वाली यह शर्ट समर सीजन में ताजगी भरा लुक देती है। इसे ब्लैक ट्राउजर या लाइट डेनिम के साथ पहनकर आप एक स्मार्ट ऑफिस स्टाइल पा सकती हैं।

मल्टीकलर प्रिंट शर्ट

मल्टीकलर प्रिंटेड शर्ट्स ऑफिस लुक में अलग ही आकर्षण जोड़ती हैं। इनका प्रिंट इतना खास होता है कि ज्यादा एक्सेसरी पहनने की जरूरत नहीं पड़ती। इसे ब्लैक पैंट या जींस के साथ पहनने पर एलिगेंट और प्रोफेशनल लुक मिलता है।

टाइगर प्रिंट शर्ट

अगर आप थोड़ा बोल्ड और फैशनेबल लुक चाहती हैं तो टाइगर प्रिंट शर्ट अच्छा विकल्प हो सकती है। इसे ब्लैक ट्राउजर और मिनिमल ज्वेलरी के साथ पहनकर स्टाइलिश ऑफिस लुक बनाया जा सकता है।

ब्लैक प्रिंट शर्ट

कैजुअल लेकिन क्लासी ऑफिस लुक के लिए ब्लैक प्रिंटेड शर्ट हमेशा ट्रेंड में रहती है। यह कॉटन और साटन जैसे अलग-अलग फैब्रिक में मिलती है और लगभग हर तरह के ऑफिस ड्रेस कोड में फिट बैठती है।

जन जन की बात जन जन तक
साप्ताहिक
जन जन विचार
RNI Regd No. ASMUL/25/A2367

Head Office : Golapi Market, 1st Floor, Beltola, Guwahati 781029
Branch Office : JanJan Vichar, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati - 781005
Contact : 69001 26012
Email: official.janjanvichar@gmail.com
Website: WWW.janjanvichar.in

ग्राहक सदस्यता फॉर्म

ग्राहक विवरण

पूरा नाम : ....

पूरा पता : ....

....

मोबाइल : .... व्हाट्सएप ....

ई-मेल (यदि हो) : ....

सदस्यता विवरण

अवधि : 1 वर्ष शुल्क : रु. 500/- मात्र

सदस्यता के साथ विज्ञापन लाभ

- सालभर (52 अंक) का अखबार नि:शुल्क मिलेगा
- एक नि:शुल्क विज्ञापन (10 सेमी. x 3 कॉलम)
- विज्ञापन प्रकाशन की तिथि ग्राहक की सुविधा अनुसार

भुगतान विवरण

☐ यूपीआई ☐ बैंक ट्रांसफर

Bank Details
JAN JAN VICHAR
Bank : HDFC, Branch : Guwahati
A/C No. 50200116979015
IFSC : HDFC0000264

(कृपया उपरोक्त में किसी एक माध्यम से ही भुगतान करें।)

भुगतान तिथि : .... रसीद संख्या:............

घोषणा

मैं स्वेच्छा से जन जन विचार साप्ताहिक अखबार की एक वर्ष की सदस्यता ग्रहण करता/करती हूँ एवं सभी शर्तों से सहमत हूँ।

ग्राहक के हस्ताक्षर : तिथि :

कार्यालय उपयोग हेतु

सदस्यता क्रमांक: .... भुगतान प्राप्त रसीद संख्या:............ प्राप्तकर्ता का नाम : ....

तिथि : .... हस्ताक्षर : ....

नेपाल ने पुरानी राजनीति को नकारा

जन जन विचार
...✍ अरविंद मोहन

नेपाल चुनाव और उसके नतीजों की व्याख्या कई तरह से की जा रही है। लेकिन चुनावी प्रक्रिया के दौरान वहां जो कुछ दिखा, उसकी चर्चा कम हुई। चुनाव की घोषणा होते ही हर बड़े दल में उठा-पटक हुई और कई टूट-फूट तथा विलय भी देखने में आए। कई दलों ने अपने 'आराध्य' का नाम लेना भी पाप समझा, तो नेपाली कांग्रेस ने नेपाल के 'जेन जी आंदोलन' और मुख्य ताकत बनकर उभर रही राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी को देखते हुए नया नेता चुना। तब भी पार्टी चारों खाने चित्त हुई। हर दल ने नौजवानों को आगे करने का प्रयास जरूर किया, पर स्थापित पुराना नेतृत्व नतीजों के पहले मैदान छोड़ने को तैयार न था। 'न था' कहना शायद गलती है, इसे 'नहीं है' कहना चाहिए। जिस समानुपातिक प्रणाली से नेपाल की संसद के एक बड़े हिस्से को भरने की विलक्षण व्यवस्था की गई है, उसके लिए पार्टियों के नामांकन की सूची चुनाव उम्मीदवार चुनने से पहले बनी। और उसे बनाने के क्रम में ही असली झगड़े हुए। आप पाएंगे कि इतने स्पष्ट जनादेश के बावजूद जब इस व्यवस्था वाले सांसद आएंगे, तो काफी पिटे-पिटाये चेहरे भी देखने को मिलेंगे.

नेपाल के लोगों ने जितना स्पष्ट जनादेश दिया है, उसे समझने की जरूरत है। यह जनादेश पुरानी राजनीति को लगभग सीधे-सीधे नकारने जैसा है। दरअसल, नेपाली मतदाता ने सारे 'वादों', अर्थात विचारधारा का नाम लेकर राजनीतिक नौटंकी करने वालों को ठुकराया है। इसमें कम्युनिस्ट खेमे के दल तो हैं ही, दक्षिणपंथी और राजशाही समर्थक दल भी हैं। एक पार्टी तो सीधे राजतंत्र की वापसी के नाम पर इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया में हिस्सा ले रही थी। एक चीन समर्थक पार्टी थी। पर चुनाव में मधेश और पहाड़ या किसी जाति और क्षेत्र का नाम लेकर राजनीति करने वालों की दुर्गति का मामला भी कम दिलचस्प नहीं है। खुद बालेंद्र शाह के मैथिली बयान या मधेशी होने का सवाल भी उठाया गया, लेकिन लगता नहीं है कि मतदाता इन बातों से किसी भी तरह प्रभावित हुए।

राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी को दो-तिहाई बहुमत का मतलब बहुत बड़ा है और वह नए कानून बनाने से लेकर इस पर्वतीय राष्ट्र की किस्मत बनाने-बिगाड़ने के लिए कोई भी कदम उठा सकती है। पर उसकी अपनी राजनीति भी है। प्रधानमंत्री बनने जा रहे बालेंदु उर्फ बालेंद्र शाह और पार्टी अध्यक्ष रबी लामिछाने के बीच दोस्ती भी चुनाव के पहले ही हुई है। लामिछाने के खिलाफ कई गंभीर आरोप भी हैं। हालांकि, पैंतीस वर्ष के बालेंद्र शाह ने अभी तक पर्याप्त समझदारी दिखाई है, लेकिन काठमांडू शहर के शासन और नेपाल के शासन में फर्क है। उम्मीद करनी चाहिए कि उनका उत्साह और नई ऊर्जा इस जवाबदेही को पूरी तरह निभाने में उनकी सहायता करेगी।

बालेंद्र शाह के साथ किसी वाद का तमगा नहीं है, न ही उन्होंने इस तरह के 'फॉर्मूले' वाले ज्यादा वायदे किए हैं। लेकिन वे विचारधारा से मुक्त होंगे, कहा नहीं जा सकता। और स्वतंत्र पार्टी का अर्थ किसी किस्म की मूल्यगत निष्ठा से स्वतंत्र होना नहीं है। बेरोजगारी, गरीबी, प्राकृतिक संसाधनों का कुप्रबंध या लूट, भारत और चीन जैसे दो बड़े पड़ोसी देशों के बीच संतुलन साधते हुए आगे बढ़ने की चुनौती और लोकतांत्रिक व्यवस्था में दिख रही कमजोरियों को दुरुस्त करने जैसे काम उसके सामने है, ऐसे में अपने इन पड़ोसियों से किसी किस्म की होड़ करने या दांव-पेच दिखाने की फुर्सत नई सरकार के पास नहीं होगी।

उधर, इस बार नेपाली राजनीति के तीन सूरमा- केपी शर्मा ओली, शेर बहादुर देउबा और पुष्प कमल दहल प्रचंड- एकदम हाशिए पर आ गए हैं। देउबा को तो उनकी पार्टी (नेपाली कांग्रेस) के नए नेताओं ने ही घर बिठा दिया, तो ओली बुरी तरह पराजित हुए हैं। प्रचंड चुनाव जरूर जीते हैं, पर उनकी पार्टी दूसरे स्थान पर भी नहीं रह पाई। यह जगह गिरते-पड़ते नेपाल कांग्रेस को ही मिली है। फिर बाबुराम भट्टराई जैसे पूर्व सहयोगी के अलग दल बनाने से भी प्रचंड की पार्टी कमजोर हुई है। ऐसे में संभव है कि सारी कम्युनिस्ट पार्टियां फिर से एकजुटता का स्वर बुलंद करें। पर लोग उन पर फिर से विश्वास करेंगे, यह कहना जल्दबाजी होगी। गगन थापा और शेर बहादुर देउबा की लड़ाई से नेपाल कांग्रेस बंटी हुई है। चुनावी धुलाई के बाद राजशाही समर्थक पार्टी या अनेक नामधारी, पर अलग-अलग जातीय प्रभाव वाले मधेशी दलों में से भी कितने टिक पाएंगे, इसे देखना होगा।

जिस तरह लोगों ने पुरानी राजनीति को ठुकराया है, वैसा ही बदलाव एक अन्य मामले में भी दिखता है। केपी शर्मा ओली और उनकी पार्टी की हार, उनकी मौकापरस्त राजनीति के साथ-साथ नेपाल की राजनीति में चीनी दखल को नकारना भी है. नए व्यक्ति के लिए राजनय भी कोरे पन्न के साथ शुरू हो, तो अच्छा रहता है। नेपाल के पास समस्याओं का काफी ऊंचा पहाड़ है. और इन समस्याओं में असली समस्या नेताओं और जिम्मेदार लोगों के भ्रष्टाचार या भाई-भतीजावाद की रही है। इस बार जनता ने ऐसे सारे झमेले किनारे करके बालेंद्र शाह को सत्ता सौंपी है। सितंबर में हुई बगावत अपनी समस्याओं के साथ नेताओं के आचरण के खिलाफ भी थी, इस बात को शाह से बढ़िया कौन जानता है।

वैश्विक तनाव का असर सोना महंगा, चांदी में हल्की गिरावट

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते वैश्विक तनाव का असर अब सर्राफा बाजार पर भी साफ दिखाई दे रहा है। सुरक्षित निवेश के रूप में मांग बढ़ने से सोने की कीमतों में हल्की तेजी दर्ज की गई है, जबकि चांदी के दाम में मामूली गिरावट आई है।

बाजार के ताजा रुझानों के अनुसार 24 कैरेट सोना आज करीब 16,332 रुपए प्रति ग्राम पर कारोबार कर रहा है, जो पिछले दिन की तुलना में थोड़ा अधिक है। वहीं 22 कैरेट सोना 14,971 रुपए प्रति ग्राम के आसपास पहुंच गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि अंतर्राष्ट्रीय अनिश्चितता और निवेशकों की सुरक्षित विकल्प की तलाश के कारण सोने की कीमतों को समर्थन मिल रहा है।

प्रमुख शहरों में भी सोने के भाव लगभग इसी स्तर पर बने हुए हैं। मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु में 24 कैरेट सोना करीब 16,332 रुपए प्रति ग्राम के आस-पास है, जबकि दिल्ली में यह लगभग 16,347 रुपए प्रति ग्राम दर्ज किया गया। चेन्नई और रांची जैसे शहरों में कीमतें कुछ अधिक देखी गईं।

दूसरी ओर चांदी की कीमतों में हल्की नरमी आई है। विशेषज्ञों के अनुसार औद्योगिक मांग में थोड़ी सुस्ती और डॉलर की मजबूती के कारण चांदी के दाम पर दबाव बना हुआ है।

विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक वैश्विक तनाव और बाजार में अनिश्चितता बनी रहेगी, तब तक सोने की कीमतों में मजबूती बनी रह सकती है, जबकि चांदी में उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है।

युद्ध विराम के लिए ईरान की तीन शर्तें, अमेरिका से मांगी सुरक्षा की गारंटी

जन जन विचार
...✍ तेहरान/वॉशिंगटन

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बीच ईरान ने संघर्ष समाप्त करने के लिए तीन स्पष्ट शर्तें रखी हैं। ईरान का कहना है कि युद्ध तभी समाप्त हो सकता है जब उसके वैध अधिकारों को स्वीकार किया जाए, युद्ध से हुए नुकसान का मुआवजा दिया जाए और भविष्य में उस पर किसी भी प्रकार का हमला न करने की ठोस अंतर्राष्ट्रीय गारंटी दी जाए।

ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन ने कहा कि स्थायी शांति का यही एकमात्र रास्ता है। उन्होंने यह संदेश रूस और पाकिस्तान सहित कई देशों के नेताओं को भी भेजा है। बताया जा रहा है कि यूरोप और पश्चिम एशिया के कुछ देश पर्दे के पीछे बातचीत के माध्यम से युद्ध समाप्त कराने का प्रयास कर रहे हैं। ईरान को सबसे अधिक चिंता इस बात की है कि वर्तमान युद्ध समाप्त होने के बाद इजरायल फिर से हमला कर सकता है। इसलिए तेहरान चाहता है कि अमेरिका स्पष्ट रूप से यह भरोसा दे कि भविष्य में अमेरिका या इजरायल ईरान पर हमला नहीं करेंगे।

दूसरी ओर अमेरिकी प्रशासन का कहना है कि फिलहाल ईरान के खिलाफ सैन्य अभियान जारी रहेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी संकेत दिया है कि भले ही ईरान की सैन्य क्षमता को नुकसान पहुंचा हो, लेकिन संघर्ष अभी जल्दी समाप्त होने के संकेत नहीं हैं।

इस युद्ध के कारण समुद्री मार्ग होर्मुज जलडमरूमध्य में भी तनाव बढ़ गया है, जहां से दुनिया के लगभग 20 प्रतिशत तेल और गैस की आपूर्ति गुजरती है। इसके कारण वैश्विक ऊर्जा बाजार में भी भारी अस्थिरता देखी जा रही है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि कूटनीतिक प्रयास सफल नहीं हुए तो यह संघर्ष लंबा चल सकता है और इसका असर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है।

तेल टैंकर 'सेफसी विष्णु' पर हमला भारतीय क्रू सदस्य की मौत

बसरा/नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच इराक के तट के पास एक तेल टैंकर पर हुए हमले में एक भारतीय नाविक की मौत हो गई। यह हमला कथित रूप से ईरान की ओर से भेजी गई आत्मघाती नाव से किया गया बताया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार अमेरिकी स्वामित्व वाला और मार्शल आइलैंड्स के झंडे वाला तेल टैंकर सेफसी विष्णु इराक के खोर अल जुबैर बंदरगाह के पास खड़ा था। इसी दौरान एक तेज रफ्तार छोटी नाव टैंकर से टकरा गई, जिससे जोरदार विस्फोट हुआ।

गणित के सिलेबस में बड़ा बदलाव कक्षा 9 में ही पढ़ाई जाएगी एपी-जीपी

जन जन विचार
...✍ रामेश्वर शर्मा

नई शिक्षा नीति के अनुरूप स्कूल शिक्षा में बड़े बदलाव की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने गणित के पाठ्यक्रम में बड़ा संशोधन करते हुए कक्षा 9 के लिए नया ड्राफ्ट सिलेबस जारी किया है। यह बदलाव नैशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023 (एनसीएफ-एसई 2023) के आधार पर किया गया है और इसे शैक्षणिक सत्र 2026-27 से लागू करने की तैयारी है।

नई रूपरेखा के अनुसार अब विद्यार्थियों को पहले की तुलना में अधिक व्यावहारिक और तार्किक तरीके से गणित पढ़ाया जाएगा। खास बात यह है कि अब तक कक्षा 10 और 11 में पढ़ाए जाने वाले अर्थमेटिक प्रोग्रेशन (एपी) और ज्योमेट्रिक प्रोग्रेशन (जीपी) जैसे महत्वपूर्ण विषयों को कक्षा 9 के पाठ्यक्रम में शामिल कर दिया गया है।

फाइनेंशियल मैथ्स का नया अध्याय

संशोधित पाठ्यक्रम में एक नया अध्याय फाइनेंशियल मैथ्स भी जोड़ा गया है। इसमें विद्यार्थियों को धन के वृद्धि और क्षय के पैटर्न, निवेश की बुनियादी समझ और प्रायिकता से जुड़े पहलुओं की जानकारी दी जाएगी।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इससे छात्रों को कम उम्र में ही आर्थिक गणना और व्यावहारिक गणित की समझ विकसित होगी।

गणित को वास्तविक जीवन से जोड़ने की कोशिश : नई पाठ्यचर्या में गणित को केवल सूत्रों और सवालों तक सीमित विषय न मानकर जीवन से जुड़ा ज्ञान बनाने पर जोर दिया गया है। इसके तहत विद्यार्थियों को पैटर्न, संख्याओं और आकृतियों के माध्यम से प्रकृति, तकनीक और दैनिक जीवन की समस्याओं को समझाने की योजना है। विशेषज्ञों के अनुसार यह बदलाव विद्यार्थियों में तार्किक सोच, विश्लेषण क्षमता और समस्या समाधान की दक्षता विकसित करने के उद्देश्य से किया गया है।

कुछ पुराने टॉपिक हटे : कक्षा 9 के नए गणित पाठ्यक्रम में कुल 15 अध्याय प्रस्तावित किए गए हैं। इसमें कुछ अध्याय हटाए भी गए हैं। हटाए गए विषयों में मुख्य रूप से- कंस्ट्रक्शन्स, पैरललोग्राम और त्रिभुज के क्षेत्रफल से जुड़े अध्याय हैं। वहीं कई प्रमुख विषय अब भी पाठ्यक्रम का हिस्सा रहेंगे, जैसे- संख्या पद्धति, बहुपद, निर्देशांक ज्यामिति, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृत्त, हेरॉन का सूत्र, पृष्ठीय क्षेत्रफल और आयतन, सांख्यिकी।

'गणित दुनिया की सार्वभौमिक भाषा' : नई पाठ्यचर्या में गणित को 'सार्वभौमिक भाषा' बताया गया है, जो तर्क और प्रमाण के आधार पर दुनिया को समझने का माध्यम बनती है। पाठ्यक्रम में कहा गया है कि गणित केवल सैद्धांतिक विषय नहीं, बल्कि इंजीनियरिंग, चिकित्सा, अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान जैसे क्षेत्रों की प्रगति का आधार भी है।

अभ्यास को दी गई केंद्रीय भूमिका : शिक्षाविदों के अनुसार गणित में सफलता का सबसे बड़ा आधार नियमित और उद्देश्यपूर्ण अभ्यास है। नई रूपरेखा में इस बात पर विशेष जोर दिया गया है कि विद्यार्थी केवल अधिक प्रश्न हल न करें, बल्कि समझ के साथ विविध प्रकार के सवालों का अभ्यास करें।

पाठ्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य

नई पाठ्यचर्या के अनुसार गणित पढ़ाने के मुख्य उद्देश्य हैं-
- विद्यार्थियों में तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच विकसित करना
- समस्या समाधान की क्षमता को मजबूत बनाना
- गणितीय विचारों को सही भाषा और प्रतीकों में व्यक्त करना
- गणित के प्रति रुचि और आत्मविश्वास बढ़ाना
- गणित को विज्ञान, तकनीक और समाज से जोड़ना

बिहार में सरकारी नौकरी का मौका कॉन्स्टेबल, सिविल जज और प्रॉसिक्यूशन ऑफिसर पदों पर भर्ती

जन जन विचार
...✍ जॉब डेस्क

सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए बिहार में बड़ा अवसर सामने आया है। राज्य में पुलिस कॉन्स्टेबल ऑपरेटर, सिविल जज और प्रॉसिक्यूशन ऑफिसर पदों पर भर्ती प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इच्छुक और योग्य अभ्यर्थी इन पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन केवल ऑनलाइन माध्यम से ही स्वीकार किए जाएंगे।

पुलिस कॉन्स्टेबल ऑपरेटर भर्ती 2026 : 993 पद-आवेदन की अंतिम तिथि 31 मार्च 2026

बिहार प्रॉसिक्यूशन ऑफिसर भर्ती 2026 : 300 पद - आवेदन की अंतिम तिथि 20 मार्च 2026

बिहार सिविल जज भर्ती :173 पद - आवेदन की अंतिम तिथि 18 मार्च 2026

पात्रता और योग्यता

पुलिस कॉन्स्टेबल ऑपरेटर : इस पद के लिए उम्मीदवार का किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10+2 (विज्ञान) या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। सामान्य वर्ग के अभ्यर्थियों को गणित, भौतिकी और रसायन विज्ञान में कम से कम 50 प्रतिशत अंक तथा एससी/एसटी वर्ग के लिए 45 प्रतिशत अंक अनिवार्य हैं। आयु सीमा 18 से 25 वर्ष निर्धारित की गई है, जबकि आरक्षित वर्ग को नियमानुसार छूट दी जाएगी।

बिहार प्रॉसिक्यूशन ऑफिसर: इस पद के लिए उम्मीदवार का एलएलबी पास होना अनिवार्य है और उसे वकालत के लिए संबंधित बार काउंसिल में पंजीकृत होना चाहिए। आयु सीमा 18 से 37 वर्ष रखी गई है, जिसमें आरक्षित वर्ग को आयु में छूट मिलेगी।

बिहार सिविल जज : सिविल जज पद के लिए भी उम्मीदवार का कानून (एलएलबी) में स्नातक होना आवश्यक है। इसके साथ ही चयन प्रक्रिया में लिखित परीक्षा और साक्षात्कार शामिल हो सकते हैं।

रोजी-रोजगार

कैसे करें आवेदन

इच्छुक अभ्यर्थी संबंधित भर्ती की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भर सकते हैं। आवेदन करने से पहले उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे अधिसूचना को ध्यान से पढ़ लें और पात्रता मानदंड की पूरी जानकारी प्राप्त कर लें।

सरकारी सेवा में करियर बनाने की इच्छा रखने वाले युवाओं के लिए यह भर्ती एक अच्छा अवसर माना जा रहा है। इसलिए पात्र अभ्यर्थियों को अंतिम तिथि से पहले आवेदन कर लेना चाहिए।

केकेएचएसओयू में 2026 सत्र के लिए प्रवेश खुले, आवेदन की अंतिम तिथि 25 मार्च

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देने वाले कृष्ण कांत हैंडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय (केकेएचएसओयू) ने जनवरी 2026 सत्र के लिए विभिन्न स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा और प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू कर दी है। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ाकर 25 मार्च 2026 कर दी गई है और इसके बाद किसी प्रकार का विस्तार नहीं दिया जाएगा।

विश्वविद्यालय द्वारा जारी सूचना के अनुसार स्नातकोत्तर स्तर पर एमए, एमकॉम, एमबीए, एमएसडब्ल्यू, एमएससी आईटी और एमएससी गणित जैसे पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। एमए में असमिया, हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, इतिहास, संस्कृत, पत्रकारिता एवं जनसंचार, योग, शिक्षा, समाजशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान जैसे विषय शामिल हैं।

स्नातक स्तर पर बीए (ऑनर्स), बीबीए, बीसीए, बीकॉम और बैचलर ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस में भी प्रवेश दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय द्वारा पत्रकारिता एवं जनसंचार, लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस, योग, अनुवाद और इंटरप्रिटेशन जैसे डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय ने जानकारी दी है कि विद्यार्थियों को ऑनलाइन और फेस-टू-फेस काउंसलिंग, ई-मेंटोरिंग, डिजिटल लर्निंग, अध्ययन सामग्री (एसएलएम) तथा राज्यभर में 300 से अधिक अध्ययन केंद्रों की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए यह एक महत्वपूर्ण अवसर माना जा रहा है। प्रवेश से संबंधित अधिक जानकारी के लिए इच्छुक अभ्यर्थी विश्वविद्यालय के हेल्पलाइन नंबर 7099096070 और 7099096071 पर संपर्क कर सकते हैं।

Teachers Required

Scholar's Global School

A. K. Dev Path, Katahbari, Guwahati

Requires qualified and dedicated teachers for **English, Mathematics, General Science Social Science, Art & Craft and Montessori Eligibility:** Graduate / Post-graduate in the relevant subject.

Interested candidates may send their CV/ Resume or contact us at the following number- **9435592931**

Admission Open for new session

आईपीएल का शेड्यूल जारी, गुवाहाटी में तीन मैच

जन जन विचार
...खेल डेस्क

आईपीएल लीग के 19वें सीजन का शेड्यूल जारी हो गया है। टूर्नामेंट की शुरुआत 28 मार्च से होगी और पहला मुकाबला गत चैंपियन आरसीबी और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच खेला जाएगा। ये ओपनिंग मैच बेंगलुरु में ही खेला जाएगा। गुवाहाटी में 30 मार्च, 7 अप्रैल और 10 अप्रैल को मैच खेले जाएंगे। सभी मैच राजस्थान रॉयल्स के हैं।

बता दें कि, बीसीसीआई ने पूरा शेड्यूल जारी नहीं किया है बल्कि महज 20 मैचों का ही शेड्यूल जारी किया गया है। यानी 12 अप्रैल तक होने वाले मुकाबलों का ही शेड्यूल अभी जारी किया गया है। आगे के मुकाबलों का शेड्यूल बीसीसीआई बाद में जारी करेगा।

वहीं इस बार पूरा शेड्यूल जारी करना थोड़ा मुश्किल लग रहा है। क्योंकि कई पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और असम में विधानसभा चुनाव होने हैं। जिसके चलते फिलहाल टूर्नामेंट के सिर्फ पहले 20 मैचों का कार्यक्रम जारी किया गया।

20 मैचों का पूरा शेड्यूल

तिथि	मुकाबला	स्थान	समय
28 मार्च 2026	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम सनराइजर्स हैदराबाद	बेंगलुरु	शाम 7:30
29 मार्च 2026	मुंबई इंडियंस बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स	मुंबई	शाम 7:30
30 मार्च 2026	राजस्थान रॉयल्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स	गुवाहाटी	शाम 7:30
31 मार्च 2026	राजस्थान रॉयल्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स	मुल्लांपुर	शाम 7:30
1 अप्रैल 2026	लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स	लखनऊ	शाम 7:30
2 अप्रैल 2026	कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद	कोलकाता	शाम 7:30
3 अप्रैल 2026	चेन्नई सुपर किंग्स बनाम पंजाब किंग्स	चेन्नई	शाम 7:30
4 अप्रैल 2026	दिल्ली कैपिटल्स बनाम मुंबई इंडियंस	दिल्ली	दोपहर 3:30
4 अप्रैल 2026	गुजरात टाइटंस बनाम राजस्थान रॉयल्स	अहमदाबाद	शाम 7:30
5 अप्रैल 2026	सनराइजर्स हैदराबाद बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स	हैदराबाद	दोपहर 3:30
5 अप्रैल 2026	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम चेन्नई सुपर किंग्स	बेंगलुरु	शाम 7:30
6 अप्रैल 2026	कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम पंजाब किंग्स	कोलकाता	शाम 7:30
7 अप्रैल 2026	राजस्थान रॉयल्स बनाम मुंबई इंडियंस	गुवाहाटी	शाम 7:30
8 अप्रैल 2026	दिल्ली कैपिटल्स बनाम गुजरात टाइटंस	दिल्ली	शाम 7:30
9 अप्रैल 2026	कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स	कोलकाता	शाम 7:30
10 अप्रैल 2026	राजस्थान रॉयल्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	गुवाहाटी	शाम 7:30
11 अप्रैल 2026	पंजाब किंग्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद	मुल्लांपुर	दोपहर 3:30
11 अप्रैल 2026	चेन्नई सुपर किंग्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स	चेन्नई	शाम 7:30
12 अप्रैल 2026	लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम गुजरात टाइटंस	लखनऊ	दोपहर 3:30
12 अप्रैल 2026	मुंबई इंडियंस बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	मुंबई	शाम 7:30

दुनिया की सबसे मजबूत टी20 टीम बनी भारत

जन जन विचार
...खेल डेस्क

भारतीय क्रिकेट टीम ने पिछले दो वर्षों में टी20 क्रिकेट में जिस तरह का दबदबा कायम किया है, उसने उसे दुनिया की सबसे मजबूत टीमों की श्रेणी में खड़ा कर दिया है। हाल के आईसीसी टी20 विश्व कप में खिताबी जीत के साथ भारत ने अपने इस प्रभुत्व को और मजबूत करते हुए इतिहास रच दिया। विशेषज्ञों का मानना है कि लगातार जीत, संतुलित टीम और आक्रामक खेल शैली ने भारतीय टीम को टी20 प्रारूप की सबसे सफल टीम बना दिया है।

पिछले दो वर्षों के आंकड़ों पर नजर डालें तो भारतीय टीम ने टी20 क्रिकेट में लगभग हर सात में से छह मुकाबले जीते हैं। टी20 जैसे अनिश्चित प्रारूप में यह उपलब्धि बेहद खास मानी जाती है, क्योंकि यहां एक छोटी गलती भी मैच का रुख बदल सकती है। इसके बावजूद भारतीय टीम ने लगातार जीत दर्ज कर अपनी मजबूती साबित की है।

विश्व कप के अहम मुकाबलों में भी भारत का प्रदर्शन शानदार रहा। सेमीफाइनल और फाइनल जैसे दबाव वाले मैचों में भी टीम ने 250 से अधिक रन का विशाल स्कोर खड़ा कर जीत दर्ज की, जो टी20 क्रिकेट में किसी भी टीम के लिए बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। इससे यह भी साबित हुआ कि भारतीय बल्लेबाजी लाइनअप न केवल आक्रामक है बल्कि बड़े मंच पर दबाव झेलने की क्षमता भी रखता है।

टीम की इस सफलता में कई खिलाड़ियों का अहम योगदान रहा है। सूर्यकुमार यादव की आक्रामक बल्लेबाजी, जसप्रीत बुमराह की घातक गेंदबाजी, हार्दिक पांड्या की ऑलराउंड क्षमता, संजू सैमसन की विस्फोटक पारियां, शिवम दुबे की उपयोगी बल्लेबाजी और अक्षर पटेल की हरफनमौला भूमिका ने टीम को संतुलन प्रदान किया। इन खिलाड़ियों ने मुश्किल परिस्थितियों में भी टीम को संभालते हुए जीत दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसके अलावा टीम प्रबंधन और कोचिंग स्टाफ की रणनीति भी इस सफलता का बड़ा कारण रही। चयनकर्ताओं ने खिलाड़ियों के वर्तमान फॉर्म और टीम संतुलन को प्राथमिकता दी, जिससे टीम में लचीलापन और प्रतिस्पर्धा बनी रही। जरूरत पड़ने पर संयोजन में बदलाव करने से भी टीम को फायदा मिला।

क्रिकेट विशेषज्ञों का मानना है कि प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की नई पीढ़ी और अनुभवी खिलाड़ियों के सही मिश्रण ने भारतीय टीम को टी20 क्रिकेट में एक नया मानक स्थापित करने में मदद की है। अब दुनिया भर की टीमें भारत को इस प्रारूप में सबसे बड़ी चुनौती के रूप में देख रही हैं।

हालांकि आगे की राह भी आसान नहीं होगी। आने वाले समय में ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड जैसे मजबूत प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ विदेशी परिस्थितियों में भारतीय टीम की असली परीक्षा होगी। फिर भी मौजूदा प्रदर्शन को देखते हुए उम्मीद की जा रही है कि भारतीय टीम आने वाले वर्षों में भी टी20 क्रिकेट में अपना दबदबा बरकरार रखेगी।

आईपीएल 2026 में खेलेंगे एमएस धोनी

जन जन विचार
...खेल डेस्क

आईपीएल 2026 से पहले चेन्नई सुपर किंग्स के प्रशंसकों के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आई है। टीम के सीईओ काशी विश्वनाथन ने पुष्टि की है कि महेंद्र सिंह धोनी आगामी आईपीएल सीजन में खेलेंगे और पूरे टूर्नामेंट के लिए टीम के साथ उपलब्ध रहेंगे।

आईपीएल 2026 की शुरुआत 28 मार्च से होने जा रही है। इस बीच धोनी को लेकर तरह-तरह की अटकलें लगाई जा रही थीं कि वे सीमित मैच खेल सकते हैं या किसी नई भूमिका में नजर आएंगे। हालांकि टीम प्रबंधन ने साफ किया है कि धोनी पूरे सीजन के लिए उपलब्ध रहेंगे, जबकि उनकी भूमिका का फैसला कोचिंग स्टाफ करेगा।

धोनी ने हाल ही में चेन्नई पहुंचकर टीम के ट्रेनिंग कैंप में अभ्यास शुरू कर दिया है। टीम की कप्तानी ऋतुराज गायकवाड़ संभाल रहे हैं, जबकि अनुभवी खिलाड़ी के रूप में धोनी टीम के लिए अहम भूमिका निभाते रहेंगे।

गौरतलब है कि 44 वर्ष की उम्र में भी धोनी पूरी तरह फिट हैं और पिछले दो आईपीएल सीजन में भी उन्होंने टीम के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया था। क्रिकेट प्रशंसकों को उम्मीद है कि आईपीएल 2026 में भी 'कैप्टन कूल' का अनुभव चेन्नई सुपर किंग्स के लिए बड़ा सहारा साबित होगा।

प्रेमी के लिए वायरल गर्ल ने छोड़ा घर

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

प्रयागराज महाकुंभ में अपनी खूबसूरत आंखों के कारण सोशल मीडिया पर वायरल हुई मोनालिसा भोसले इन दिनों अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार उन्होंने अपने मुस्लिम प्रेमी फरमान खान से शादी कर ली है।

बताया जाता है कि इस रिश्ते का परिवार ने विरोध किया और पिता द्वारा अन्य युवक से शादी का दबाव बनाया जा रहा था। इसके बाद मोनालिसा अपने प्रेमी के साथ केरल के तिरुवनंतपुरम स्थित थंपनूर पुलिस स्टेशन पहुंचीं और सुरक्षा की मांग की।

पुलिस ने दोनों पक्षों को समझाते हुए कहा कि मोनालिसा बालिग हैं और उन्हें अपनी पसंद से जीवनसाथी चुनने का कानूनी अधिकार है। बाद में मोनालिसा अपने प्रेमी के साथ वहां से चली गईं।

'लव जिहाद' के आरोप से मामला गरमाया

मोनालिसा की इस शादी ने नया विवाद भी खड़ा कर दिया है। कुछ लोगों और फिल्म निर्देशक सनोज मिश्रा ने इसे 'लव जिहाद' का मामला बताते हुए सवाल उठाए हैं। वहीं मोनालिसा ने इन आरोपों को खारिज करते हुए साफ कहा है कि यह उनका निजी फैसला है और उन्होंने अपनी मर्जी से यह कदम उठाया है।

इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर भी बहस तेज हो गई है-जहां एक तरफ कुछ लोग इसे साजिश बता रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कई लोग इसे दो बालिगों का निजी निर्णय मानकर समर्थन कर रहे हैं।

बैठे-बैठे पैर हिलाना बुरी आदत या फायदेमंद

जन जन विचार
...✍ हेल्थ डेस्क

अक्सर लोगों को कुर्सी पर बैठे-बैठे पैर हिलाने की आदत होती है और आसपास के लोग इसे बुरी आदत या घबराहट का संकेत मानते हैं। लेकिन स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार यह हमेशा गलत नहीं होता। बैठे-बैठे पैर हिलाना एक तरह की माइक्रो एक्सरसाइज की तरह काम कर सकता है। इससे शरीर की छोटी-छोटी मांसपेशियां सक्रिय होती हैं और मेटाबॉलिज्म बढ़ता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह की हल्की गतिविधि से कैलोरी खर्च होती है, ब्लड फ्लो बेहतर होता है और पैरों की सूजन कम होने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा पैर हिलाने से मांसपेशियों में हलचल बनी रहती है, जिससे खून का प्रवाह बेहतर होकर दिल तक लौटने में मदद मिलती है। इससे लंबे समय तक बैठे रहने से होने वाली कुछ समस्याओं में भी राहत मिल सकती है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर पैर हिलाना सामान्य आदत है तो यह जरूरी नहीं कि बुरी ही हो, लेकिन यदि यह बहुत ज्यादा या अनियंत्रित हो तो डॉक्टर से सलाह लेना बेहतर है।

किन कारणों से हिलते हैं पैर

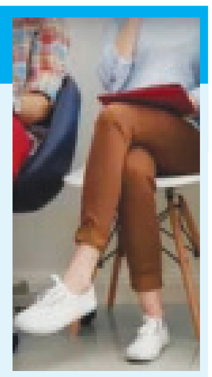

☛कई लोग आदतन या ऊर्जा बढ़ाने के लिए पैर हिलाते हैं। ☛तनाव और एंजाइटी की स्थिति में भी यह आदत दिख सकती है। ☛ डिहाइड्रेशन या लो ब्लड प्रेशर के कारण भी ऐसा हो सकता है। ☛ज्यादा कैफीन या शराब लेने पर भी पैरों में कंपन हो सकता है। शरीर में विटामिन बी12, आयरन, मैग्नीशियम या पोटैशियम की कमी भी इसका कारण बन सकती है।

असम के कवि ने रची 45 फीट लंबी कविता विश्व रिकॉर्ड का दावा

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम की सांस्कृतिक राजधानी गुवाहाटी के कामख्या कॉलोनी निवासी कवि, लेखक और कोटमेकर गोबिंदा कुमार विश्वास ने हिंदी में विश्व की सबसे लंबी कविता रचने का दावा किया है। करीब 50 फीट लंबी इस कविता को संपादन के बाद 45 फीट के आकार में तैयार किया गया है। इस अनूठी रचना को लिखने में उन्हें लगभग छह महीने का समय लगा।

कवि विश्वास के अनुसार उनकी इस लंबी कविता का मुख्य विषय 'देश को विकसित राष्ट्र कैसे बनाया जाए' है। कविता में सामाजिक चेतना, राष्ट्र निर्माण, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और नैतिक मूल्यों जैसे विषयों को प्रमुखता से स्थान दिया गया है।

गोबिंदा कुमार विश्वास केवल कवि ही नहीं बल्कि लेखक, गीतकार, कोटमेकर, संपादक और समाजकर्मी के रूप में भी सक्रिय हैं। अब तक वे अपनी रचनात्मक उपलब्धियों के लिए 6 विश्व रिकॉर्ड, 2 राज्य स्तरीय रिकॉर्ड और 1 राष्ट्रीय रिकॉर्ड अर्जित कर चुके हैं।

उनकी अधिकांश रचनाएं महिलाओं के जीवन, संघर्ष और संवेदनाओं पर आधारित होती हैं। वे बहुभाषी रचनाकार हैं और अब तक 5 भाषाओं में कविताएं, 6 भाषाओं में कोट्स तथा 4 भाषाओं में गीत लिख चुके हैं।

कवि विश्वास ने असम के महान गायक स्वर्गीय जुबीन दा के जीवन और व्यक्तित्व से प्रेरित होकर 222 कोट्स और 11 कविताएं भी लिखी हैं, जिन्हें उन्होंने 6 भाषाओं में अभिव्यक्त किया है।

गोबिंदा कुमार विश्वास के पिता रंजीत विश्वास हैं, जबकि उनकी माता स्वर्गीय आभा विश्वास थीं। गुवाहाटी की कामख्या कॉलोनी में रहते हुए वे साहित्य और समाज सेवा के क्षेत्र में लगातार सक्रिय हैं।

साहित्य जगत में उनकी इस नई उपलब्धि को लेकर स्थानीय साहित्यकारों और पाठकों में उत्साह का माहौल है। माना जा रहा है कि यह प्रयास असम की साहित्यिक प्रतिभा को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिला सकता है।

बिना इंटरनेट और सिम के मोबाइल पर चलेगा वीडियो!

जन जन विचार
...✍ देहरादून

देश में डिजिटल शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में एक नई तकनीकी पहल सामने आई है। अब बिना इंटरनेट और सिम कार्ड के भी मोबाइल फोन और टीवी पर फिल्में, शैक्षणिक सामग्री तथा मनोरंजन कार्यक्रम देखे जा सकेंगे। इस नई तकनीक के लिए ग्राफिक एरा और फ्रॉस्ट्रीम के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता (एमओयू) किया गया है।

यह एमओयू देहरादून स्थित ग्राफिक एरा डीम्ड यूनिवर्सिटी में आयोजित कार्यक्रम के दौरान संपन्न हुआ। इस पहल का उद्देश्य दूरदराज और इंटरनेट-विहीन क्षेत्रों के विद्यार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और उपयोगी सामग्री पहुंचाना है। नई तकनीक के माध्यम से मोबाइल और टीवी पर सीधे शैक्षणिक मॉड्यूल, पाठ्य सामग्री और कौशल आधारित कार्यक्रम देखे जा सकेंगे।

कार्यक्रम में उत्तराखंड के शिक्षा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने इस पहल को शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि यह तकनीक विशेष रूप से ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों के छात्रों के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगी, जहां इंटरनेट की सुविधा सीमित है या लोग महंगे डाटा पैक का खर्च वहन नहीं कर पाते।

उन्होंने कहा कि इस पहल से 'मेक इन इंडिया' को भी मजबूती मिलेगी और देश के शिक्षा तंत्र में सकारात्मक बदलाव आएगा। इससे विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सामग्री सुलभ होगी और नई तकनीकों के प्रति उनकी समझ भी विकसित होगी।

ग्राफिक एरा डीम्ड यूनिवर्सिटी के अधिकारियों ने बताया कि यह तकनीक भविष्य में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। इसके माध्यम से छात्रों को इंटरनेट के बिना भी पाठ्यक्रम आधारित सामग्री, शैक्षणिक वीडियो और प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध कराए जा सकेंगे।

पूर्वांचल प्रिंट्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी-781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट: www.janjanvichar.in ●संपादक : धनेश्वर चौधरी